ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ–आषाढ़ २०७८ जून–जुलाई २०२१

समय–सायकिल चलती जाए,
पार कर चले सारे मोड़ ।
नयी भोर की आशा ले चल,
बीती काली रातें छोड़ ।

₹ २०

कविता

आया जेठ

– रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

भैया मेरे आया जेठ।
बड़ा निर्दयी बिलकुल ठेठ।।
धरती तपती जैसे आग।
सूख रहे हैं वन औ' बाग।।
सूखे सारे ताल–तलैया।
पानी माँगे अपनी गैया।।
कई–कई नल बन्द हुए।
सूख गए दो तीन कुँए।।
कैसे निकलें बाहर हम।
लू लगती है घुटता दम।।
अपना सब सुख दूर भगा।
दिनचर्या है गयी डगमगा।।
कटे न दिन हो गया पहाड़।
रूठा बैठा दूर अषाढ़।।
हे भगवान दया करिए।
मेघों को आज्ञा करिए।।
शुरु करें थोड़ा छिड़काव।
मौसम में आये बदलाव।।
मेंढक बोलें नाचें मोर।
हरियाली हो चारों ओर।।
हर किसान गुन गाएगा।
गन्ना–धान उगाएगा।।
हम बच्चों की फौज बनेगी।
सुबह–शाम की मौज बनेगी।।

– हरदोई (उ. प्र.)

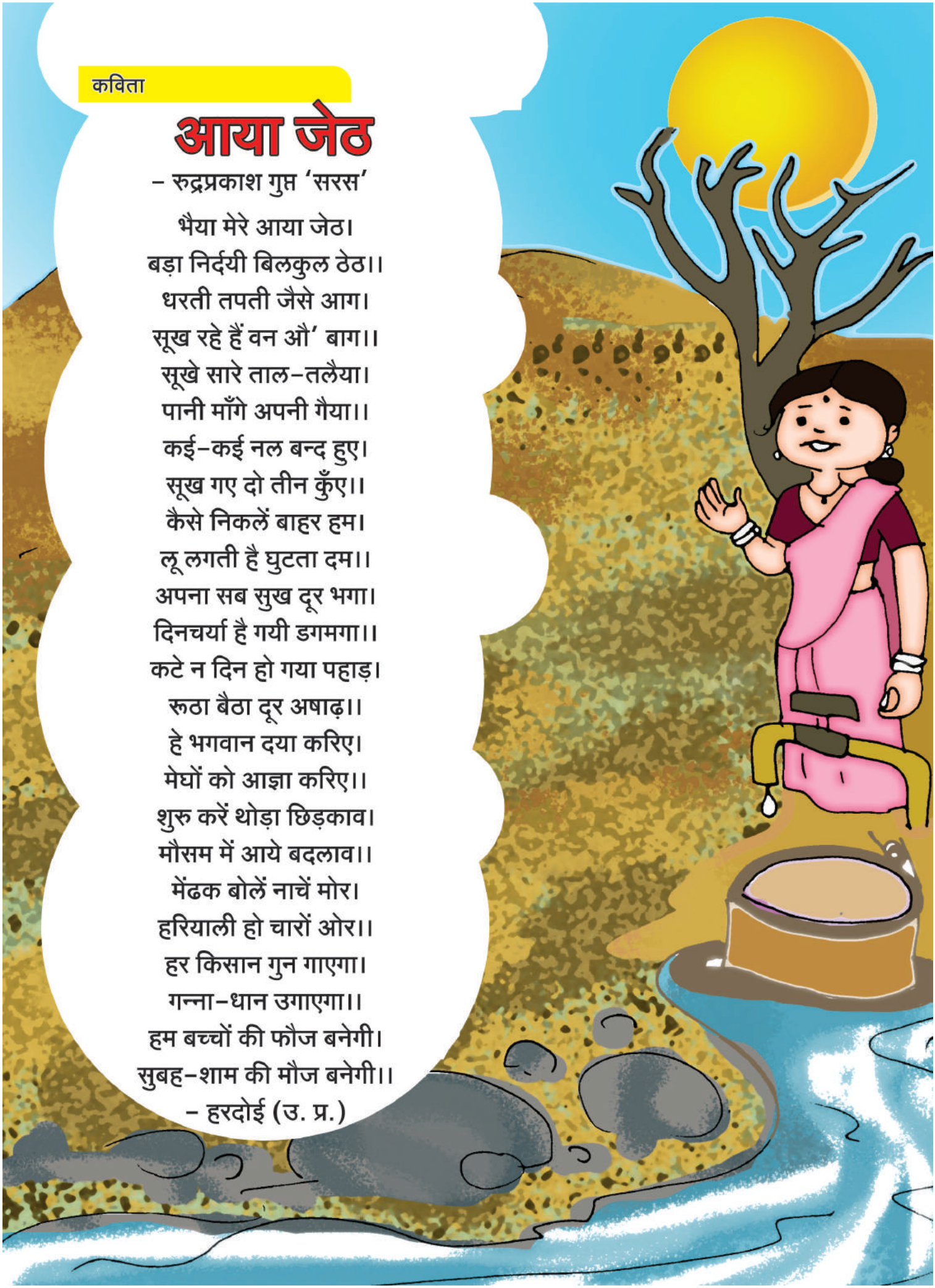

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७८ ▪ वर्ष ४१-४२
जून-जुलाई २०२१ ▪ अंक १२ व १

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

जुलाई आ गई। आकाश में मेघ-मण्डलियाँ जमा होने लगीं। आपने देखा यह बादल-टोली जब भी मिलती है आपस में अपने गर्मी के अनुभव बाँटते हुए भी हँसती-खिलखिलाती रहती हैं। जबकि उनकी गर्मियाँ बड़े कठोर अनुभवों से भरी होती हैं फिर भी उनकी हँसी शीतल फुहारें बनकर बरसती हैं। समुद्र से भाप बनना, भाप से बादल बनना, बादलों का जंगल-पहाड़ों पर अटकते-टकराते, सम्हलते हुए हवा के झोंकों से इधर-उधर छितरते-बिखरते रहना, लेकिन वे अपने इन कठिन दिनों की बातें भी प्रसन्न होकर ही बताते हैं मानों इन परेशानियों को अँगूठा दिखाकर आए हों।

इधर-धरती पर भी असंख्य छोटे-छोटे अंकुर उग आए हैं। गर्मियों की कहानी इनकी भी सुखद तो नहीं। सूखी, तपती धरती में मिट्टी के ढेलों से दबे-दबे, बीज की गोदी में बिना हलचल के दुबके हुए ही कटी हैं इनकी भी गर्मियाँ; पर देखिये न परिस्थिति थोड़ी बदली कि आषाढ़ की पहली फुहारों से धरती जरा नरमायी और ये कितने उत्साह से अपने नन्हें-नन्हें सिर से ढेलों को ढकेलते फूट पड़े हैं कि सारी धरती हरियाली हो गयी। इन अंकुरों के मन में भी बीती परिस्थितियों का कोई बोझ नहीं, उन्हें याद करके कभी रोते नहीं, बस प्रतिदिन आशा व विश्वास से आगे बढ़ने की होड़-सी लगाए कैसे हिलमिल कर मुस्कुराते हैं।

इन गर्मियों के भी पहले से एक और प्रांगण बहुत सूना-सूना रहा है। बहुत याद करता है आपको। कोरोनाकाल की परिस्थितियों में आप सब तो फिर भी अपने परिवार के साथ थे लेकिन वह तो एकदम अकेला, बिना परिवार के, कब से बैचेनी से आपका रास्ता देख रहा है। क्योंकि उसके परिवार में तो आप, आपके शिक्षक, पालक ये ही हैं न? जो इन दिनों उससे लगभग दूर ही रहे। जी हाँ, वह है **आपका विद्यालय**। उसके तो बादल भी आप हैं और अँकुर भी आप। सावधानी पूरी रखना होगी पर विद्यालय का सूनापन दूर करने के लिए नन्हें-नन्हें बादलों, छोटे-छोटे बीजों की तरह आपको भी साहस करना होगा कि आपकी भागदौड़ हँसी-किलकारी से सूने कक्षा कक्ष और विद्यालय प्राँगण फिर चहक उठें।

बच्चों की प्रार्थना तो परमेश्वर भी शीघ्र सुनते हैं आप ईश्वर से भी प्रार्थना कीजिए कि परिस्थितियाँ शीघ्र से शीघ्र सामान्य हो जाएँ और बादलों से भरे आसमान व हरियाली से भरी धरती की तरह आपकी शालाएँ भी पुन: हरी-भरी हों। आपके स्वास्थ्य की शुभकामनाओं के साथ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- नीम की आवाज -डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०५
- चिड़ियों की चहक -डॉ. शील कौशिक १६
- हाथी का अण्डा -आशीष श्रीवास्तव २८
- वन और हरियाली -डॉ. के. रानी ३८
- जल है तो कल है -मोनिका जैन 'पंछी' ४८

एकांकी

- जन्मोत्सव हो तो.... -शंकरलाल माहेश्वरी १२

बाल प्रस्तुति

- चिंटू का कुत्ता -श्वेतांक 'कृष्ण' ३६

आलेख

- पर्यावरण संरक्षण -डॉ. सुनीता शेवगांवकर ०९
- ध्यान -डॉ. प्रेम भारती २६
- राष्ट्रगीत के रचयिता... -विजय सिंह माली ३४
- हमारे लोकवाद्य -ललितनारायण उपाध्याय ४२
- उत्सव न बनें.... -शिखर चंद जैन ४५

कविता

- आया जेठ -रूद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ०२
- गुरु महिमा -घनश्याम मैथिल 'अमृत' २२
- मुन्नी शाला जाएगी -उमा माहेश्वरी २२
- कोरोना वायरस आया -डॉ. सरोज गुप्ता २५
- चन्द्रशेखर आजाद -डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय ३७
- गिजाई -डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ४४
- बीर बहूटी -पुखराज सोलंकी ४४
- चंदा के घर दावत -डॉ. अलका अग्रवाल ५१

चित्रकथा

- सच - संकेत गोस्वामी १५
- ओह! आईसक्रीम - देवांशु वत्स ३१
- क्या मांगा - संकेत गोस्वामी ५०

स्तंभ

- यह देश है वीर जवानों का १४
- आओ ऐसे बनें १८
- विषय एक कल्पना अनेक : वृक्ष -मदनगोपाल सिंघल
- वृक्ष बगावत कर देंगे २०
  पेड़ लगाओ - प्रभुदयाल श्रीवास्तव २०
  वृक्ष का आरोप -पं. गिरिमोहन 'गुरु' २१
  आपकी पाती -उमेचन्द्र चौहान ३०
- छ: अंगुल मुस्कान ३०
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ३३
- संस्कृति प्रश्नमाला ३७
- पुस्तक परिचय ४६

छोटी कहानी

- समझ गया रमण -इंजी. आशा शर्मा ११
- आदर्श शहर -शैलजा भट्टड़ १९
- चूहा बना शेर -डॉ. हनुमानप्रसाद 'उत्तम' २३
- जूते -डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल २४
- चुटकी और चिकू -मेघा कदम ३२

आवरण कल्पना

कोरोनाकाल के कारण विगत कई माह से शालाएँ बंद हैं लेकिन बच्चों कि आशा है कि शीघ्र ही उनकी शालाएँ पुन: आरंभ होंगी। आवरण इसी आशा को प्रतिबिंबित कर रहा है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

नीम की आवाज

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

मनोहर गाँव का एक गरीब किसान था, जो थोड़ी–सी जमीन पर खेती करके अपने परिवार का पेट पालता था। उसका एक बेटा दीनू था जो बहुत ही मेधावी था। दीनू एक छोटे से कच्चे घर में अपने माता–पिता के साथ रहता था। दीनू ने आँगन में गुलाब, गेंदा, तुलसी आदि के पौधे लगा रखे थे। हैंडपम्प से पानी लाकर दीनू इन पौधों को सींचता रहता था। उसके पौधे खूब हरे–भरे थे। तुलसी में मंजरियाँ निकलने लगी थीं। दीनू की माँ प्रतिदिन तुलसी की पूजा करके जल चढ़ाती थीं।

गर्मी की छुट्टियाँ समाप्त हो गयी थी। विद्यालय खुल गए थे। दीनू को कापी–किताबें विद्यालय से ही मिल गयी थीं। वह बड़ी प्रसन्नता से विद्यालय जाता था। बरसात आ गई थी। धरती, घास–फूस पौधों तथा फसलों से हरी–भरी हो गयी थी।

एक दिन दीनू विद्यालय से घर आ रहा था। तभी उसने रेलवे लाइन के पास की खाईं में नीम का एक नन्हा पौधा उगा देखा। पौधे में चार–छः पत्तियाँ ही लगी थीं। दीनू के मन में आया कि क्यों न वह नीम के इस पौधे को यहाँ से निकालकर अपने घर के आँगन में लगा दे। बरसात का मौसम था ही। जमीन मुलायम थी। अतः उसने बड़ी आसानी से नीम का पौधा जड़ सहित उखाड़ लिया। दीनू जब नीम के पौधे सहित घर आया तो माँ ने पूछा– ''बेटा! यह नीम का पौधा क्यों उखाड़ लाया?''

दीनू ने उत्तर दिया– ''माँ! इसे आँगन में लगाऊँगा। विज्ञान वाले गुरुजी ने नीम से बहुत लाभ बताए थे।'' ''पर अपना आँगन तो छोटा–सा है। इसमें नीम का पेड़ कैसे बढ़ेगा?'' माँ ने दीनू की बात काटते हुए पूछा।

दीनू ने माँ को समझाया– ''माँ! नीम के पेड़ को हम सीधा बढ़ने देंगे। वह आँगन के बीच से सीधा ऊपर निकल जाएगा और हम सबको छाया देगा?''

इस प्रकार दीनू ने वह नीम का पौधा आँगन के बीचों–बीच लगा दिया। बरसात के मौसम में नीम धीरे–धीरे स्वाभाविक रूप से बढ़ता रहा। दीनू बीच–बीच में टेढ़ी–मेढ़ी शाखाओं की छटाई करता रहता था। आँगन में छाया बढ़ती रही। एक वर्ष.... दो वर्ष... तीन वर्ष धीरे–धीरे समय बीतता रहा। अब तक दीनू का नीम का पेड़ छत से ऊपर निकल गया और छायादार हो गया। दीनू अपना गृहकार्य भी नीम की छाया में बैठकर करता था। नीम के पेड़ पर बहुत सी चिड़ियों ने अपने–अपने घोंसले बना लिए थे। दीनू को

अब सुबह जागने में भी दिक्कत नहीं होती थी। सूरज निकलने के पहले ही चिड़िया अपने घोंसलों से निकल कर पेड़ की फुनगी पर बैठकर गुनगुनी धूप का आनन्द लेतीं और मस्त होकर चहचहाने में जुट जातीं। चिड़ियों की आवाज सुनकर दीनू अपने आप उठ जाता था।

इसी बीच दीनू का सहपाठी तरुण एक दिन उसके घर आया। दीनू और तरुण दोनों मिलकर बहुत देर तक पढ़ाई–लिखाई करते रहे। तरुण ने दीनू से कहा– ''तुम्हारा नीम का पेड़ तो अब बहुत बड़ा हो गया है। इसकी छाया से तुम्हारे आँगन में भी अँधेरा रहता होगा। धूप भी नहीं आ पाती होगी। तुम ऐसा करो कि इस पेड़ को बेच दो। तुम्हें काफी पैसे भी मिल जाएँगे और आँगन खूब धूप व हवादार हो जाएगा।''

वास्तव में तरुण एक बढ़ई था। उसके पिताजी बढ़ईगीरी का काम करते थे। अच्छी लकड़ी को देखकर ही तरुण ने दीनू से पेड़ बेच देने की बात कही थी। पर दीनू को तो पेड़–पौधों से बहुत प्यार था। अत: उसने कहा– ''तरुण! क्या तुम्हें विज्ञान वाले आचार्यजी की बात याद है? उन्होंने कहा था कि पेड़–पौधों में भी जान होती है। हम सबकी तरह वे भी सजीव होते हैं।'' ''हाँ, याद तो है, पर वह तो विज्ञान की बात है। उससे यहाँ क्या लेना–देना है?'' तरुण ने हाभी भरते हुए प्रश्न किया।

दीनू दुखी होकर बोला– ''माना कि नीम का पेड़ बेच देने से हमें रुपए मिल जाएँगे, पर विचार करो कि जब इस जानदार नीम के पेड़ पर आरा चलेगा तो हमें कैसा लगेगा? क्या यह हत्या न होगी, क्या नीम का पेड़ हमें आशीर्वाद देगा?''

दीनू की इस बात का उत्तर तरुण से देने न बना। फिर भी जाते–जाते वह कह गया– ''भावुक न बनो! विचार करना और अगर मन बने तो बताना। हम पिताजी से कहकर तुम्हारा पेड़ बिकवा देंगे।''

''हमें नहीं बेचना पेड़–वेड़, समझे तरुण! पेड़ से हमें ऑक्सीजन मिलती है। पेड़ छाया देता है और नीम के पेड़ से तो आस–पास का वातावरण रोग मुक्त और कीटाणुमुक्त रहता है।''

दीनू की लम्बी–चौड़ी बहस सुनकर तरुण अपने घर की ओर निकल गया। तभी एक दिन हकीम सिंह चौधरी दीनू के घर के पास से निकले। वे गाँव के मुखिया भी थे। सभी लोग उनका आदर करते थे। दीनू ने आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम किया।

चौधरी साहब ने दीनू को आशीर्वाद देते हुए कहा– ''प्रसन्न रहो दीनू! मैंने सुना है कि तुमने हाई–स्कूल की परीक्षा में जिलेभर में सबसे अधिक नंबर पाए हैं। आगे चलकर तुम बहुत बड़े पद पर पहुँचोगे।''

दीनू ने प्रसन्न होते हुए कहा– ''सब आप जैसे बड़े–बुजुर्गों का आशीर्वाद है।'' चौधरी साहब बोले– ''आज तो हम तेरे पास ही आए है, दीनू!'' ''आदेश दीजिए चौधरी साहब! मेरे योग्य क्या सेवा है?''– दीनू ने विनीत भाव से कहा।

चौधरी साहब बोले– ''वास्तव में हमारे दो पोतों ने अभी हाल ही में पढ़ना–लिखना प्रारंभ किया है। तुम एक होशियार और होनहार बालक हो। तुम हमारे पोतों को एक घंटा पढ़ा दिया करो। इस तरह जहाँ हमारे पोते पढ़ने–लिखने में अच्छे निकलेंगे, वहीं तुम्हें कुछ आर्थिक लाभ भी हो जाएगा।''

बात दीनू की समझ में आ गयी। उसके संस्कृत अध्यापक ने भी कहा था कि विद्या खर्च करने से और बढ़ती है। विद्यादान तो महादान होता है। फिर इसमें तो उसे पैसों का लाभ भी होगा। अत: दीनू ने चौधरी साहब की बात मान ली और प्रतिदिन शाम को वह घंटे भर उनके पोतों को पढ़ना–लिखना सिखाने लगा।

चार छह महीने में चौधरी साहब के दोनों पौत्र–पढ़ने–लिखने में काफी होशियार हो गए। वे अपनी कक्षा के होनहार छात्र माने जाने लगे। चौधरी साहब इसका श्रेय दीनू को ही देते थे। दीनू भी ट्यूशन से मिले रुपये उन्हीं के पास जमा करता जा रहा था।

जाड़े के दिन थे। दीनू के पिता को खेतों में सिंचाई और खाद देनी थी। इसके लिए काफी पैसा चाहिए था। एक दिन दीनू के पिता ने तरुण के पिता को बुलाकर नीम का पेड़ दिखाया। दीनू के पिता मनोहर ने कहा– ''भाई, हमें सिंचाई और खाद के लिए रुपयों की आवश्यकता है। तुम ऐसा करो कि हमारा यह नीम का पेड़ बिकवा दो।''

पर यह क्या ? दीनू विद्यालय से लौटकर अपने पिता के पीछे खड़े–खड़े उनकी बातें सुन रहा था। सामने आकर दीनू ने कुछ दृढ़ स्वर में कहा– ''पिताजी! नीम का पेड़ नहीं बिकेगा। यह पेड़ मैंने लगाया है। पेड़ को बेचना और काटना तो आसान है। पर पेड़ को लगाना और उसकी सेवा करना, कितना कठिन है ?'' दीनू के पिता ने गुस्सा होते हुए कहा– ''पेड़ नहीं बेचेंगे तो खेत में खाद–पानी कैसे डालेंगे ? और खाद–पानी नहीं डालेंगे तो अनाज कहाँ से पैदा होगा ? और अनाज नहीं होगा तो हम लोग क्या खाएँगे ?'' दीनू ने उसी दृढ़ता से कहा– ''पिताजी! नीम का पेड़ नहीं बिकेगा आपको खाद–पानी के लिए पैसे चाहिए तो मिल जाएँगे।'' दीनू के पिता मनोहर ने डपटते हुए कहा– ''पेड़ नहीं बिकेगा तो पैसे कैसे मिलेंगे ? कौन देगा हमें ?''

दीनू ने कहा– ''मैं दूँगा पैसे, पिताजी! मैं चौधरी साहब के पोतों को पढ़ाता हूँ। उसके पैसे चौधरी साहब के पास ही जमा हैं। वहीं जाकर ले लेना।'' मनोहर अपने बेटे दीनू को लेकर चौधरी साहब के पास पहुँचा। मनोहर ने सारी बात चौधरी साहब को बताई, तो वे हँसकर बोले– ''तुम्हारा बेटा दीनू! बड़ा ही होनहार और योग्य है। उसने तुमसे सच ही कहा है। उसके पैसे हमारे पास जमा हैं। तुम उन पैसों से खेत में खाद–पानी दो।''

उन्होंने आगे कहा– ''मनोहर! जरा सोचो नीम का पेड़ तो तुम्हारे बेटे ने लगाया है। पेड़ भी तो तुम्हारे बेटे के समान ही हुआ। क्या थोड़े से पैसों के

लिए उस पर आरा चलवाते तुम्हें अच्छा लगेगा ?''

मनोहर चौधरी साहब की बात के सामने निरुत्तर हो गया। वह खाद–पानी के लिए पैसे लेकर घर लौट आया। दीनू ने भी संतोष की साँस ली कि चलो, उसका विद्यादान नीम के पेड़ का रक्षक भी सिद्ध हुआ।

इसी बीच दीनू की इंटर की बोर्ड परीक्षाएँ निकट आ रही थीं। होली के बाद ही उसकी परीक्षाएँ शुरू होने वाली थीं। एक दिन मनोहर ने दीनू से कहा– ''होली पर तुम्हारे लिए कमीज और पेंट सिलवानी है। कपड़ा खरीदना है। अब यह नीम का पेड़ भी बहुत पुराना हो गया है। इसकी शाखाएँ दूर–दूर तक फैल गयी हैं। इसके गिरने से घर को खतरा भी है। अब ऐसा करते हैं कि इस पेड़ को बेच देते हैं। तुम्हारे कपड़े भी बन जाएँगे और घर की सुरक्षा भी हो सकेगी। चिड़ियाँ भी सारा आँगन गंदा करती रहती हैं।''

दीनू को फिर दृढ़ होकर कहना पड़ा– ''पिताजी! यह पेड़ नहीं बिकेगा, इसे मैंने लगाया है। घर को खतरा जब होगा तो वैसे भी होगा, पर जरा विचार करो पेड़ पर आरा चलेगा, चिड़ियों के घोंसले

नष्ट होंगे तो आपको कैसा लगेगा? इस पाप का भागी कौन होगा?'' मनोहर बोला– ''यह सब किताबी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। होली पर तुम्हें कपड़े चाहिए, इसलिए नीम का पेड़ बेचना ही होगा।''

दीनू ने दृढ़ता से कहा– ''मुझे नहीं चाहिए नए कपड़े। मैं पुराने कपड़ों में ही होली मना लूँगा, पर नीम का पेड़ मेरा प्यारा पेड़, मेरा प्यारा मित्र, उस पर आँच नहीं आने दूँगा।'' दीनू की बात में दम था। अत: मनोहर एक बार फिर दीनू के समक्ष लाचार हो गया। पर नीम का पेड़ जैसे दीनू और उसके पिता मनोहर की बातें सुन रहा था। नीम के पेड़ ने सोचा कि आखिर कब तक दीनू उसे बचाता रहेगा? पर वह कुछ न बोला, चुप रहा। पेड़ सब कुछ सुनते और समझते हैं... पर प्रकट रूप से कुछ बोलते नहीं।

होली का त्यौहार दीनू ने पुराने किन्तु धुले कपड़े पहनकर मनाया। अपने मित्रों से गले मिला और भावुकता में आकर नीम के पेड़ से भी गले मिला। नीम का पेड़ उसके दिल की बात को समझता था। उसे दीनू जैसे मित्र पर सचमुच गर्व था।

दीनू ने नीम की छाया में बैठकर परीक्षा की तैयारी की। परीक्षा के बाद उसने अपने पिता मनोहर की फसल की कटाई–मड़ाई में भी काफी सहायता की। आज उसका परीक्षा फल आने वाला था। मुखियाजी के यहाँ समाचार–पत्र आता था। दीनू समाचार–पत्र की प्रतीक्षा में मुखिया के घर पर ही बैठा था। सहसा समाचार–पत्र वाला पत्र ले आया। मुखियाजी ने उसे समाचार–पत्र देते हुए कहा– ''लो दीनू! अपना परीक्षा परिणाम (रिजल्ट) देखो। मैंने मिठाई भी मंगाकर रख ली है। दीनू ने समाचार–पत्र उठाकर देखा तो चकित रह गया। वह जिले में ही नहीं, पूरे प्रदेश में प्रथम आया था।

दीनू ने मुखिया जी के पैर छुए तो उन्होंने आशीर्वाद सहित उसके मुँह में एक पूरा लड्डू रख दिया। खुशी–खुशी वह घर आया। उसने माता–पिता को भी यह समाचार दे दिया। वे बहुत प्रसन्न हुए।

तभी अचानक आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट होने लगी। सूरज को बादलों ने ढँक लिया। यकायक तेज आँधी आ गयी। नीम का पेड़ भी दीनू की सफलता पर प्रसन्न हो रहा था। आनंदित... बहुत आनंदित! तभी संभाल न सका। उसकी शाखाएँ चरमराकर टूट गई। तेज हवा ने पेड़ को नीचे से उखाड़ सा दिया। नीम का पेड़ आँगन मी कच्ची दीवार पर इतनी जोर से गिरा कि दीवार भी ढह गयी.. ढेर हो गयी। पास ही खड़ा दीनू जोर–जोर से रोने लगा। ''नीम! मेरे प्यारे नीम!.... तुम हमें छोड़कर क्यों चल दिए? तुम पर तो मुझे गर्व था।''

गिरता हुआ नीम भी जैसे बहुत कुछ अनुभव कर चुका था, बहुत कुछ कहना चाह रहा था। उस आँधी की साँय–साँय करती हवा के बीच दीनू को लगा कि जैसे नीम की आवाज उससे कुछ कह रही हो। नीम का पेड़ कह रहा था– ''मित्र दीनू! तुम्हारे पिता को खाद–पानी की आवश्यकता थी, तुम्हारे होली के कपड़े बनने थे, मकान को धोखा था। तुम मुझे कहाँ तक बचाते। एक न एक दिन तो मुझे कटना ही था। एक न एक दिन तो मुझ पर आरा चलना ही था, इसलिए मेरा गिरना अच्छा ही रहा। हाँ, मुझे दु:ख है कि तुम्हारे आँगन की दीवार मेरे कारण गिर गयी। पर तुम चिंता मत करना। पिताजी से कहना कि वे मुझे बेचकर फिर से नई दीवार बनवा लें। अलविदा मेरे साथी दीनू।''

दीनू फूट–फूटकर रोने लगा और रोते–रोते बोला– ''मित्र नीम! अलविदा! आज मैं तुम्हारे सामने वायदा करता हूँ कि प्रति वर्ष अपने जन्मदिन पर एक पौधा लगाऊँगा और एक–दिन इतने पेड़ हो जाएँगे कि हमारा गाँव पेड़ों से घिरा हुआ एक हरा–भरा तपोवन बन जाएगा।''

– हरदोई (उ. प्र.)

पर्यावरण संरक्षण

– डॉ. सुनीता ओदक शेवगांवकर

प्यारे बच्चो! दिनांक ५ जून को हम प्रतिवर्ष पर्यावरण दिवस मनाते हैं, और इसके संरक्षण और संवर्धन की बात करते हैं। आज के समय में 'पर्यावरण' यह शब्द हमारे दैनिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है, और इसका संरक्षण एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। क्योंकि हमारा जीवन पूर्णत: पर्यावरण की परिधि में नियंत्रित है। इसके संरक्षण के महत्व की आवश्यकता जानने से पहले हम यह जान ले कि वस्तुत: पर्यावरण है क्या ?

पर्यावरण शब्द परि+आवरण इन दो शब्दों से मिलकर बना है। जो आवरण पृथ्वी को हमारे चारों ओर से घेरे है, वह पर्यावरण है। पृथ्वी पर उपस्थित जल या जलमंडल, वायु या वायुमंडल स्थल या पृथ्वी पर उपस्थित जैवीय पदार्थ जो हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं, इनका संतुलित होना हमारे लिए परम आवश्यक है।

मनुष्य भी पर्यावरण का ही एक अंग है, और इसका जीवन पूर्णत: पर्यावरण के संतुलन से प्रभावित होता है। पर्यावरण में अनेक गैस हैं जो पर्यावरण में विद्यमान सभी पदार्थों अर्थात पशु–पक्षी जल धरती और अन्य वस्तुओं को प्रभावित करती हैं, अर्थात उपरोक्त सभी घटक पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं।

उपरोक्त पर्यावरण के सभी घटकों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं। १) जैविक, जो जीवित हैं, उनमें पेड़–पौधे, पशु–पक्षी सूक्ष्म जीव और मानव है। २) अजैविक, जो जीवन रहित है, उदाहरण मिट्टी, पत्थर, पहाड़ आदि। इसमें भी दो विभाग हैं १) प्राकृतिक, २) मानव निर्मित। प्राकृतिक में पेड़ इत्यादि और मानव निर्मित में पुल, भवन इत्यादि।

हमारी पृथ्वी प्राकृतिक संसाधनों का प्रचुर भंडार है, लेकिन जब मानव द्वारा इस संपदा का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए किया जाता है तो

बदलाव के कारण पर्यावरण संकट में पड़ता है और पृथ्वी का संतुलन बिगड़ता है। तब हमारा ध्यान इसके संरक्षण की ओर जाता है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में दो प्रकार से प्रयास किये जा रहे हैं। १) वैश्विक स्तर पर। २) भारत अपने स्तर पर।

१) स्टॉकहोम स्वीडन सम्मेलन १९७२ में बड़ी संख्या में विश्व के बड़े देशों की सहभागिता रही पहला विश्व सम्मेलन ५ जून १९७२ में आयोजित किया गया और तभी से प्रतिवर्ष यह दिवस पर्यावरण दिवस के रूप में जाना जाता है, इसकी विधिवत घोषणा १९७३ में की गयी, और तब से यह अभी तक जारी है।

इसके बाद ब्राजील में भी इससे संबंधित दो लेखों को प्रकाशित किया गया जिसमें पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों पर प्रकाश डाला गया। बच्चो! अब हम भारत के द्वारा किये गये पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की ओर देखते हैं।

१९८५ में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय का गठन किया गया। इसका उद्देश्य यह है कि देश की जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाए।

१९८६ पर्यावरण संरक्षण अधिनियम बनाया

गया। इसके अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई।

१९८८ वन संरक्षण नीति को बनाया गया। जिसमें ३३ प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित किया गया इस परिप्रेक्ष्य में देखा गया की जहाँ वनों की बहुलता है, वहाँ जलवायु परिवर्तन अधिक सुरक्षित है।

२००२ जैव विविधता संरक्षण, जैव विविधता को बचाने का प्रयास किया गया।

२००४ राष्ट्रीय पर्यावण नीति की रचना की घोषणा की गयी। प्यारे बच्चो, अब आप बड़े हो रहे हो, इस देश के भावी कर्णधार हो, हम सभी आपकी ओर आशा की दृष्टि से देखते हैं।

इस लेख के माध्यम से हमने समझा कि पर्यावरण क्या है, इसका संरक्षण क्यों आवश्यक है। वैश्विक और भारतीय स्तर पर इसके लिए क्या प्रयास किये जा रहे हैं। अत: आप सब भी पर्यावरण संरक्षण की ओर ध्यान दें। हम सब को भी सजग होकर पर्यावरण सुरक्षा के प्रयास करने चाहिए।

– पुणे (महाराष्ट्र)

श्रद्धांजलि वे पौधों को स्नेह ही नहीं करते थे उनसे बतियाते भी थे

इन्दौर।'देवपुत्र' *के अन्तरंग हितैषी और देश के प्रख्यात पर्यावरणविद्* ***पद्मश्री तच्चेरिल गोविन्दन् कुट्टी मेनन जी*** *हमारे बीच नहीं रहे। गाँधीजी की स्वदेशी की अवधारणाओं को जीवन में चरितार्थ कर दिखाने वाले श्री मेनन साहब कस्तूरबा ग्राम की सामाजिक एवं पर्यावरण सम्बन्धित गतिविधियों के लिए केरल से इन्दौर आए थे। तब से वे इन्दौर के ही होकर रह गए। इन्दौर को चारों ओर हरियाला बनाने में उनके योगदान की साक्षी आज भी असंख्य वृक्षावलियाँ दे रहीं है। इन्दौर के प्रसिद्ध पितृपर्वत पर खड़े दो लाख वृक्ष उन्हीं की मूल संकल्पना से नागरिकों ने अपने पूर्वजों की स्मृति में लगाए हैं। गो सेवा के लिए समर्पित श्री मेनन को पेड़–पौधों से अपनी संतान जैसा लगाव था। वे पौधों को लाड़–दुलार ही नहीं करते थे उनसे बातें भी करते थे मानों उनका मन पढ़ रहे हों। उनसे पर्यावरण के बारे में बातें सुनकर तो अनेक देशवासी पर्यावरणप्रेमी से पर्यावरण संरक्षक कार्यकर्ता बन गए।*

पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी भाई के श्री मेनन की देखरेख में चलने वाली गौशाला दर्शन के कार्यक्रम को गायों के विश्राम के समय को छोड़कर तय करने का आग्रह मनवाने वाले वे अनन्य गोभक्त थे। उनकी पर्यावरण सम्बन्धित विशिष्ट सेवा एवं योगदान के फलस्वरुप भारत सरकार ने उन्हें ***पद्मश्री*** *से अलंकृत किया था।*

आ. श्री मेनन सा. एवं श्रीमती मेनन का देवपुत्र पर अनन्य स्नेह रहा है। लम्बी अस्वस्थता के बाद भी वे पारिवारिकता से देवपुत्र एवं देवपुत्र के परिजनों से जुड़े रहे। ऐसे सतत कर्मठ, गौसेवक और पर्यावरण सचेतक ***श्री कुट्टी मेनन जी*** *का चला जाना देवपुत्र के लिए भी एक आघात है। परमात्मा उन्हें मोक्ष प्रदान करें एवं परिवार को सांत्वना दें यही प्रार्थना करते हुए हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।* ***–समस्त देवपुत्र परिवार***

समझ गया रमण

– इंजी. आशा शर्मा

''दादी माँ! मैं बहुत बहादुर बच्चा बन गया हूँ.... मुझे किसी से भी डर नहीं लगता.... न छिपकली... न कॉकरोच और ना ही चींटियों से...।'' नन्हे रमण ने गाँव से आई अपनी दादी के सामने कॉलर ऊँचा करते हुए कहा।

''अरे वाह! बहादुर होना तो बहुत अच्छी बात है।'' दादी ने भी उसे शाबाशी दी। ''इस घर में आकर तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी मिस्टर कॉकरोच अब तुम नहीं बचोगे।'' रमण ने अपनी ओर टुकुर–टुकुर ताकते हुए कॉकरोच को देखकर कहा। अभी कॉकरोच कहीं छिप पाता इससे पहले ही ''पट्ट'' की आवाज के साथ रमण ने उस पर चप्पल से वार कर दिया। कॉकरोच का कचूमर निकल गया। रमण के चेहरे पर विजयी मुस्कान तैर गई।

''रमण! देख तो... स्नानागार (बाथरूम) में छिपकली है।'' एक दिन माँ ने डरते–डरते कहा।

''अरे! इतनी बड़ी होकर आप छिपकली से डर गई... अभी देखो मेरा कमाल...'' कहते हुए रमण सींक वाली झाड़ू उठा लाया और ''फटाक–फटाक'' करके छिपकली पर प्रहार करना शुरू कर दिया। घबराई हुई छिपकली ने अपनी पूँछ छोड़ दी और इधर–उधर भागने लगी। उसने बहुत प्रयत्न किया किन्तु रमण से बच नहीं सकी। मरी हुई छिपकली को झाड़ू पर उठा कर रमण योद्धा की तरह स्नानागार (बाथरूम) से बाहर निकला।

पिछले कई दिनों से दादी देख रही थी कि कभी चींटियों पर लक्ष्मण रेखा लगाकर... कभी मच्छर–मक्खियों को इलेक्ट्रॉनिक रैकेट से मारकर तो कभी छिपकली–कॉकरोच पर चप्पल–झाड़ू से वार करके रमण अपने आप को बहुत बहादुर समझ रहा था। आज भी वही हुआ। रसोई में कॉकरोच देखते ही माँ जोर से चिल्लाई और रमण चप्पल लेकर घात लगाने के लिए तैयार हो गया।

''रुको रमण! तुम्हारा यह तरीका बहुत ही अमानवीय है। इसे बहादुरी नहीं कहते.... यह तो क्रूरता है।'' दादी ने उसे चप्पल मारने से पहले ही रोक दिया।

''कैसे दादी! ये कीड़े–मकौड़े तो हमारे स्वास्थ्य के दुश्मन हैं ना... इन्हें तो मारना ही चाहिए वर्ना यह हमें बीमार कर देंगे।'' रमण को दादी की बात सुनकर आश्चर्य हुआ। ''निःसंदेह यह हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं किन्तु इन्हें इस प्रकार मारना इसका समाधान नहीं है। हमें तो इनसे बचाव के रास्ते अपनाने चाहिये।'' दादी ने उसके हाथ से चप्पल ले ली। अब तक कॉकरोच भी न जाने कहाँ आकर छिप गया था।

''सुनो रमण! अपने घर और आसपास साफ सफाई रखने से कीड़े–मकौड़ों का आना बहुत कम हो जाता है। फिर भी यदि कोई भूलाभटका आ ही जाये तो उसे भगा देना चाहिए... छिपकली और मच्छर–मक्खियों को रोकने के लिए खिड़की–दरवाजों की चिटकनी बंद रखो... चींटियों को हल्दी या टेलकम पाउडर से भगाया जा सकता है... कॉकरोच लौंग की गंध से भाग जाते हैं... लेकिन हाँ! स्वच्छता पर ध्यान देने की सबसे अधिक आवश्कयता है समझे तुम?'' दादी ने प्यार से उसके गाल खींचे।

''जी दादी! समझ गया।'' कहते हुए रमण ने चप्पल को चप्पल स्टेण्ड में रख दिया। और साबुन से अपने हाथ धोने लगा। ''शाबाश रमण! अब हुए हो तुम सचमुच में बहादुर.. स्वच्छ रहो.. स्वस्थ रहो...'' दादी ने उसकी पीठ ठोकी। ''मैं भी सफाई का पूरा ध्यान रखूँगी।'' कहते हुए माँ भी हँस दी।

–बीकानेर (राजस्थान)

जन्मोत्सव हो तो ऐसा–रक्तदान जैसा

– शंकरलाल माहेश्वरी

पात्र परिचय

अवधेश – राजेन्द्र का पुत्र

राजेन्द्र – अवधेश के पिता

ममता – अवधेश की माता

हिमांशु – अवधेश का मित्र

ममता– सुनो! कल अवधेश का जन्मदिवस है। शाम को आते समय बाजार से केक, बत्तियाँ, गुब्बारे लेते आना।

राजेन्द्र– नहीं, वह सब कुछ नहीं होगा। न केक कटेगा, न बत्तियाँ बुझाई जाएँगी और किसी भी प्रकार का दिखावा नहीं होगा।

ममता– जन्मदिन का उत्सव है तो यह सब तो होना ही चाहिए ना ?

राजेन्द्र– नहीं, यह सब कुछ पाश्चात्य परम्परा है। हमें तो भारतीय पद्धति के अनुसार ही जन्मोत्सव मनाया जाना चाहिए और यही होगा।

ममता– फिर यह उत्सव कैसे मनाया जायेगा ?

राजेन्द्र– प्रात: शुभ मुहूर्त में सरस्वती जी की प्रतिमा, चित्र के आगे १३ घी के दीपक अवधेश द्वारा जलाये जाएँगे। क्योंकि यह अवधेश का तेरहवाँ जन्मदिवस है, रामायण पाठ होगा, मांगलिक गुड़ का प्रसाद वितरित होगा। अवधेश के द्वारा सभी बालक–बालिकाओं को शिक्षण सामग्री उपहार स्वरूप प्रदान की जाएगी। सायंकाल स्थानीय वृद्धाश्रम में जाकर वृद्धजनों को मिष्ठान युक्त भोजन करवाया जायेगा। अवधेश के साथी वे जो भी परिचित बधाई देंगे उन्हें कोरोना से बचाव हेतु मास्क तथा ग्लब्ज भेंट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया जाएगा।

ममता– वास्तव में इस तरह का आयोजन तो बड़ा शुभ होगा।

अवधेश– आपने तो मेरे जन्मोत्सव का स्वरूप ही बदल दिया।

राजेन्द्र– वस्तुत: हम लोग पाश्चात्य पद्धति का अंधानुकरण करते आ रहे हैं जो हम भारतीयों के लिये उचित नहीं है।

राजेन्द्र– अवधेश! हम भारतीय हैं। हमारी संस्कृति में केक काटना और बत्तियाँ बुझाना सब कुछ वर्जित है। यह तो अशुभ है। दीप प्रज्वलित करना श्रेष्ठ माना गया है, जो जीवन को प्रकाशवान बनाने का परिचायक है। दान–पुण्य, रोगी सेवा, यज्ञ–हवन, पूजा–पाठ आदि हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं।

अवधेश– पिताजी! मेरी इच्छा है कि इस अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन रखा जाये ताकि रोगी सेवा का भी विशेष अवसर मिलेगा।

राजेन्द्र– हाँ बेटा! यह तो मैंने सोच ही रखा था। इसके लिये बहुत प्रचार भी कर दिया गया है। शिविर में १०१ रक्तदाताओं की संख्या का मेरा लक्ष्य है।

अवधेश– तब तो मैं आज ही विद्यालय में इसकी चर्चा करते हुए सभी छात्रों को उनके परिजनों से रक्तदान कराने के लिये आग्रह करूँगा। इसमें गुरुजन भी सहयोग करेंगे।

राजेन्द्र– अच्छा है, तुम्हारी माँ, तुम्हारे मित्र, मेरे परिचित सभी प्रयत्न करेंगे तो हमारा लक्ष्य पूर्ण हो जाएगा।

हिमांशु– रक्तदान शिविर से तो अवधेश का जन्मदिन स्मरणीय बन जाएगा।

राजेन्द्र– हाँ बेटा! इससे आवश्यकता के रोगियों को रक्त भी उपलब्ध होगा। जिससे वे रोग मुक्त हो सकेंगे।

हिमांशु– दादा! रक्तदान हर कोई कर सकता है क्या?

राजेन्द्र– नहीं, हिमांशु! जिस व्यक्ति की आयु १८ वर्ष से कम और ६० वर्ष से अधिक है वे लोग रक्तदान नहीं कर सकते हैं।

हिमांशु– रक्तदान करने वाले के लिये और क्या आवश्यक है?

राजेन्द्र– रक्तदाता स्वस्थ व निरोगी हो। उसका हिमोग्लोबीन १२.५ ग्राम तक हो। व्यक्ति का वजन ५० किलो से अधिक हो व लम्बी बीमारी से ग्रसित नहीं हो तथा उसके शरीर का तापमान सामान्य हो।

हिमांशु– इस सबकी जाँच कैसे होगी?

राजेन्द्र– मैंने रामस्नेही हॉस्पिटल प्रशासन से बात कर ली है। वहाँ से डॉक्टर की एक टीम जाँच के उपकरणों सहित आ जायेगी।

अवधेश– पिताजी! एक व्यक्ति को कितना रक्त देना होता है।

राजेन्द्र– लगभग ३५० मिली लीटर।

हिमांशु– रक्त निकालने में कोई खतरा तो नहीं है?

राजेन्द्र– बिल्कुल नहीं, हर बार नई सुई का उपयोग होता है।

हिमांशु– तब तो रक्त निकालने में काफी समय लगता होगा।

राजेन्द्र– लगभग १५ मिनट।

अवधेश– पिताजी! एक व्यक्ति एक वर्ष में कितनी बार रक्तदान कर सकता है?

राजेन्द्र– पूरे वर्ष में तीन माह के अन्तराल में चार बार रक्तदान कर सकता है।

हिमांशु– यह निकाला हुआ खून कैसे सुरक्षित रहेगा?

राजेन्द्र– एकत्रित खून को अस्पताल के ब्लड बैंक में रखा जाता है, जहाँ निश्चित तापमान में सुरक्षित रहता है।

अवधेश– रक्तदान से प्राप्त रक्त किस बीमारी में उपयोगी होता है।

राजेन्द्र– आकस्मिक दुर्घटना, प्रसव काल, नवजात शिशु का रक्त बदलना, थेलिसिमिया, हिमोफिलिया आदि रोगों के उपचार हेतु।

हिमांशु– क्या रक्त के स्थान पर अन्य कोई विकल्प नहीं है ?

राजेन्द्र– नहीं, रक्त कहीं बनाया नहीं जा सकता। यह मानव द्वारा ही उपलब्ध हो सकता है।

हिमांशु– दादा! अब तो मैं भी अपना जन्मदिन इसी प्रकार से मनाऊँगा और मेरे मित्रों को भी यही सलाह दूँगा।

राजेन्द्र– अच्छा है बेटा! इससे तुम्हारा जन्मदिन भी सार्थक हो जायेगा। परोपकार होगा। लोग प्रेरित होकर रक्तदान भी कर सकेंगे जो पीड़ित मानवता की सेवा के लिये उपयुक्त होगा।

अवधेश– पिताजी! वर्तमान में कोरोना महामारी से लोग परेशान हैं। कोरोना से प्रभावितों के लिये भी तो रक्त की आवश्यकता होती है।

राजेन्द्र– हाँ बेटा! इन दिनों कोरोना से पीड़ित व्यक्ति को प्लाज्मा देकर स्वस्थ किया जाने का प्रयोग हो रहा है। यह प्लाज्मा भी रक्त द्वारा ही मिलता है। जो व्यक्ति कोरोना पॉजिटिव से नेगेटिव हो जाते हैं उनका रक्त प्लाज्मा थेरेपी के लिये काम में लेते हैं।

हिमांशु– दादा! अवधेश के जन्मोत्सव पर आयोजित रक्तदान शिविर की सफलता के लिये कामना करते हुए अवधेश को ढेर सारी बधाइयाँ और शुभकामनाएँ।

– आगूचा (राजस्थान)

यह देश है वीर जवानों का–१९

रायफल मैन संजय कुमार

३ मार्च १९७६ को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में जन्मे संजयकुमार ने फौज में भर्ती होने का स्वप्न बचपन से ही अपनी आँखों में स्थिर कर लिया था। उनके चाचा स्वयं फौजी थे एवं वे ही इस स्वप्न की प्रेरणा बने थे। दसवीं कक्षा से सेना में भर्ती होने के उनके प्रयत्न तीसरी बार में सफल हुए जब वे १३ जम्मू व कश्मीर रायफल्स के लिए चुन लिए गए।

अपनी बटालियन के साथ १९९९ में वे द्रास भेजे गए। कारगिल युद्ध के समय ४ जुलाई १९९९ को उन्होंने प्लैट टाप एवं रिज की कार्यवाही में गोलियों की बौछारों के बीच शत्रु के बंकरों में घुसकर अदम्य आहस व शौर्य का परिचय दिया।

उस दिन प्वाईंट ४८७५ पर अधिकार करने के लिए जाने वाली यूनिट का नेतृत्व अपनी इच्छा से आगे बढ़कर स्वीकार कर लिया था। शत्रु के एक सैंगर से अचानक स्वचालित गोलाबारी प्रारंभ हो गई हमारे सैनिकों के पैर सहसा थम गए। टोली के नायक संजय कुमार तुरंत स्थिति को भाँपकर अपनी सुरक्षा की चिंता किए बिना दुश्मनों के बीच कूद पड़े और तीन घुसपैठियों को धराशायी कर दिया। वे बहुत घायल हो चुके थे पर साहसपूर्वक दुश्मन का दूसरा सैंगर भी उन्होंने सूना कर दिया। शत्रु घबराकर भागा ही नहीं अपनी युनिवर्सल मशीनगन भी छोड़ गया जो संजय कुमार के हाथों पड़कर दुश्मनों का ही काल बन गई।

चोटी पर कब्जा जमाए बिना रक्त से लथपथ संजय को कोई भी नहीं रोक सकता था संभवत: मृत्यु भी नहीं। अन्तत: सफलता मिली और अद्भुत पराक्रम, अदम्य साहस, असाधारण शौर्य के परिचय ने उन्हें **'परमवीरचक्र'** का अधिकारी तो बना ही दिया था।

सच

चित्रकथा-

अपने दोस्त को राजू ने बताया-

इस मंदिर के लिए कहते हैं, यहां मांगा हुआ हर बार पूरा होता है...

..और मैं इसे बिल्कुल सच मानता हूं.

ऐसा क्या हुआ है तुम्हारे साथ?

मैं हर बार मंदिर में अंदर प्रार्थना करता हूं बाहर पड़े मेरे जूते सुरक्षित रहें...

और हर बार वापसी में वे मुझे बाहर पड़े मिल भी जाते हैं.

चिड़ियों की चहक

– डॉ. शील कौशिक

छुट्टी वाले दिन काव्या हमेशा अपने पिताजी के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करती थी। आज रविवार के दिन सुबह काव्या के पिता छत पर बनी पानी की टंकी देखने जाने लगे तो काव्या भी उनके साथ हो ली। काव्या को छत से चारों ओर का दृश्य बहुत अच्छा लगा। उसने अपने घर के साथ लगे उद्यान में नीचे झाँका, तो ऊँचे हरे–भरे पेड़, हरी–हरी घास और क्यारियों में भिन्न–भिन्न प्रकार के खिले हुए सुंदर फूल दिखाई पड़े। वह चकित रह गई। उद्यान में खेलते समय इन पर कभी उसका ध्यान क्यों नहीं गया? चारों दिशाओं में दृष्टि घुमाने पर उसे अलग–अलग डिजाइन के बने घर दिखाई पड़े। तभी उसकी दृष्टि उद्यान के साथ दूसरी ओर वाले घर की छत पर पड़ी। उसने देखा वहाँ बहुत सारी चिड़िया हैं। वे बड़े मजे से दाना चुग रही हैं और चीं–चीं करके चहक रही हैं। काव्या ने चारों ओर घूमकर देखा कि चिड़िया इसी छत पर एकत्र हैं। तभी वह चौंकी, ''अरे! यह घर तो मेरे मित्र टीटू का है। उसकी छत पर तो बहुत सारी चिड़िया आती हैं। काव्या बहुत देर तक खड़ी चिड़ियों को देखती रही। उसके पिताजी के पुकारने पर उसका ध्यान भंग हुआ। वह पिताजी के साथ नीचे चली आई।

काव्या के मन–मस्तिष्क में चिड़िया घर कर गई। संध्या को उद्यान में खेलते समय काव्या ने टीटू से पूछा, ''कल मैंने तुम्हारे घर की छत पर बहुत–सी चिड़िया देखीं! इतनी चिड़िया तुम्हारे घर कैसे आईं?''

''मेरे पिताजी प्रतिदिन सुबह चिड़ियों के लिए छत पर दाना डालते हैं और मिट्टी के बर्तन में पानी रखकर आते हैं।'' काव्या की समझ में आ गया।

अगली सुबह काव्या जल्दी उठकर टीटू के घर जा पहुँची। उसने टीटू को कहा– ''आओ, छत पर चिड़िया देखने चलें।'' टीटू के पिताजी वहाँ दाना बिखरा रहे थे। काव्या यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि उनकी आहट से चिड़ियाँ उड़कर दूर नहीं गईं, बल्कि चुपचाप दाना चुगती रहीं। काव्या ने लौटकर अपने पिताजी को चिड़ियों के लिए दाना लाने के लिए कहा। उन्होंने उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया। इससे काव्या रूठ गई। ''अच्छा बाबा! मैं कल दाना ले आऊँगा।'' जगदीश ने काव्या को दुलराते हुए कहा।

इधर काव्या को चिड़ियों का साथ इतना भाया कि वह प्रतिदिन सुबह टीटू की छत पर पहुँच जाती। चिड़ियों के प्रति काव्या की धुन को देखकर काव्या के पिताजी ने विचार किया– कल मैं दाना लेकर काव्या के साथ छत पर अवश्य जाऊँगा। अगले दिन काव्या अपने पिताजी के साथ छत पर पहुँची। दोनों ने दाना बिखराया और मिट्टी के पात्र में पानी भरा। कुछ देर तक काव्या वहाँ बैठी प्रतिक्षा करती रही किन्तु वहाँ एक भी चिड़िया नहीं आई।

''चलो, अभी विद्यालय के लिए देर हो जाएगी, चिड़िया कल अवश्य आ जाएगी।''

पिताजी की आवाज सुनकर वह नीचे चली आई। प्रतिदिन दाना डालने के बाद भी जब कई दिनों

तक चिड़िया वहाँ नहीं आई तो काव्या उदास हो गई। ''हमारे यहाँ चिड़िया क्यों नहीं आईं.... वे हमसे क्यों रूठी हैं पिताजी?'' दाना बिखरा कर वह चिड़ियों को इस तरह गाकर बुलाने लगी–

चिड़िया रानी आ जा
दाना–दुनका खा जा
चीं–चीं गीत सुना जा
मन मेरा बहला जा

संध्या को उद्यान में खेलते हुए काव्या ने सब बच्चों को अपनी बात बताई– ''टीटू के घर की छत पर इतनी सारी चिड़िया आती हैं और हमारी छत पर एक भी नहीं।''

''चिड़िया तुम्हारे पिताजी से भय खाती होंगी जैसे हम सब।'' सब एक साथ हँस पड़े।

''इस सबका क्या अर्थ है? थोड़ा स्पष्ट बताओ।''

''देखो काव्या! हम तुम्हारा मन नहीं दुखाना चाहते। पर यह सच है कि हमें भी तुम्हारे पिताजी अच्छे नहीं लगते।''

''हाँ, एक बार मेरी गेंद तुम्हारे घर के आँगन में चली गई थी। तुम्हारे पिताजी मेरे पीछे मुझे मारने के लिए दौड़े। उन्होंने मुझे इतनी जोर से डाँट लगाई कि मैं काँपने लगा। उन्होंने गेंद तो क्या लौटानी थी? उसके बाद उनके कर्कश स्वभाव के कारण हमारी गेंद चली भी जाती तो कभी हिम्मत नहीं होती कि उनसे अपनी गेंद माँग लें। हाँ तुम्हारी माँ चोरी–छिपे कभी–कभी हमारी गेंद दे देती है।'' सब बच्चों ने अंकुश की हाँ में हाँ मिलाई।

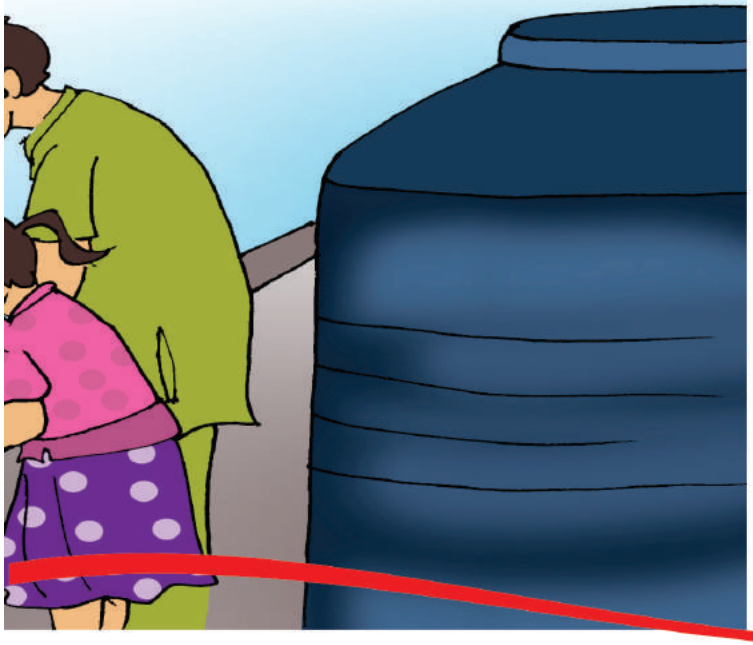

''दूसरी ओर टीटू के पिताजी हैं, वे हमें कभी नहीं डाँटते और हमारी गेंद भी लौटा देते हैं। वे तो कभी–कभी उद्यान में आकर हमारे साथ खेलने भी लगते हैं। कई बार जब हम अपनी पानी की बोतल लाना भूल जाते हैं और खेलते समय हमें प्यास लगती है, तब टीटू के पिताजी हमारे लिए घर से भी पानी लाकर दे देते हैं।'' सब स्वर में स्वर मिला रहे थे।

''एक बार मेरे घुटने में चोट लगी। तब उन्होंने अपने घर ले जाकर मेरी मरहम–पट्टी की थी। शानू के झूले से गिर जाने पर उन्होंने जल्दी से उसके पिताजी को फोन कर बुलाया और उनके साथ अस्पताल गये। भला ऐसे मधुर और दूसरों की मदद करने वाले स्वभाव के व्यक्ति के पास कौन नहीं जाना चाहेगा?'' सबसे बड़े भैया दीपू ने कहा।

काव्या को यह सब सुनकर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। वह घर लौटी तो बहुत उदास थी। उसकी माँ ने पूछा तो कुछ न बोली। रात को उसने ठीक प्रकार से भोजन भी नहीं किया। आखिर काव्या के पिताजी ने उसे गोद में बैठाकर कहा– ''बताओ तो हमारी बिटिया रानी चुप–चुप और उदास क्यों है? किसी से झगड़ा हुआ क्या? किसी ने कुछ कहा क्या? मैं उसे ऐसी डाँट पिलाऊँगा कि याद रखेगा।''

''आपको पता है पिताजी! हमारी छत पर चिड़िया क्यों नहीं आतीं?''

''नहीं तो बेटा!''

''क्योंकि आप बच्चों को डाँटते हो... उनसे कभी प्यार से बात नहीं करते हो... मेरे सारे मित्र आपसे भय खाते हैं और दूसरी तरफ टीटू के पिताजी जब भी उद्यान में आते हैं सब बच्चे उन्हें घेर लेते हैं... उन्हें बहुत प्यार करते हैं... सब उनकी बातें मानते हैं,

क्योंकि वे सब हैं ही इतने अच्छे। वे सबकी गेंद लौटा देते हैं। बच्चों को डाँटते नहीं, बल्कि उनकी हर प्रकार से मदद करते हैं... किसी को पानी पिलाते हैं.... किसी की चोट पर मरहम लगाते हैं... वे बहुत-बहुत अच्छे हैं। और इसीलिए चिड़िया उनकी छत पर आती हैं हमारी छत पर नहीं।'' काव्या की बात सुनकर काव्या के पिताजी सन्न रह गये।

''पिताजी! क्या सचमुच इसीलिए चिड़िया हमारे घर नहीं आती ? बताओ न पिताजी।''

काव्या के पिताजी को स्वयं पर ग्लानि हो रही थी। उन्होंने काव्या को गले लगाते हुए कहा- ''देखना बेटी! एक दिन चिड़िया तुम्हारे घर भी अवश्य आएँगी।'' वे घर के पिछवाड़े गये और बाल्टी में इकठ्ठी की हुई सारी गेंद काव्या को पकड़ाते हुए कहा- ''उनको कहना अब से मेरे पिताजी किसी बच्चे पर गुस्सा नहीं करेंगे और न ही गेंद अपने पास रखेंगे।''

काव्या अपलक अपने पिताजी को देखती रही और उनके गले में अपनी नन्हीं-नन्हीं बाँहें डाल दीं।

- सिरसा (हरियाणा)

आओ ऐसे बनें

रामप्रसाद बिस्मिल

- मदनगोपाल सिंघल

वह बालक उन दिनों आठवीं कक्षा में पढ़ता था। उसे कहीं जाना था अत: स्टेशन पहुँचकर उसने तृतीय श्रेणी का टिकट खरीदा और प्लेटफॉर्म पर आया। सामने ही गाड़ी खड़ी थी और उसके एक इण्टर क्लास के डिब्बे में उसके कुछ सहपाठी मित्र बैठे हुए थे। उन्होंने देखा तो दौड़कर आये और उसे अपने डिब्बे में लिवा ले गये।

और उसी समय गाड़ी चल दी। कुछ देर पश्चात् ही बालक को ज्ञात हुआ कि वह अपनी भूल से इण्टर के डिब्बे में चढ़ आया है तो उसके हँसते हुए मुख-मण्डल पर खेद की गम्भीर रेखा-सी उभर आई। ''क्यों! क्या हुआ?'' उसके एक साथी ने पूछा। ''कुछ नहीं।'' उसने उत्तर दिया- ''मैं सोच रहा था कि तृतीय श्रेणी का टिकट लेकर इण्टर में यात्रा करना तो चोरी ही है।''

मित्र मण्डली हँस पड़ी किन्तु इससे उस बालक की गम्भीरता में कुछ अन्तर न आया। अगला स्टेशन आया तो बालक उस डिब्बे से उतरा और सीधा स्टेशन मास्टर के कमरे में जा पहुँचा।

''मैं भूल से अपने स्टेशन से यहाँ तक इण्टर क्लास के डिब्बे में बैठ आया हूँ।'' उसने अपना टिकट स्टेशन मास्टर की टेबल पर रखते हुए कहा- ''अत: नियम के अनुसार किराये के जितने भी पैसे होते हों वे मुझसे ले लिये जाएँ।''

स्टेशन मास्टर बालक के मुँह की ओर देखता रह गया। उसने बालक की पीठ थपथपाई।

''शाबास!'' उसने कहा- ''तुम जैसे बालकों पर किसी भी देश को गर्व हो सकता है।''

और हमारे देश को सचमुच ही इस बालक पर गर्व हुआ भी। वह बालक था- **रामप्रसाद बिस्मिल**, काकोरी प्रकरण में विश्व ख्याति प्राप्त करने वाला क्रान्तिकारी नेता जिसने आगे चलकर अपनी भारत माता के गुलामी के बंधनों को काटने के लिये, जेल के सींकचों के पीछे, हँस कर फाँसी की डोरी को अपने गले में डाल लिया था।

छोटी कहानी

आदर्श शहर

यह कैसी बदबू है ? शीतल ने विद्यालय के बस अड्डे पर आसपास खड़े पालकों से पूछा। तभी उसकी दृष्टि पीछे गई तो देखा वहाँ एक बिल्ली मरी पड़ी है। शीतल घबरा गई और वहाँ से दौड़कर दूर खड़ी हो गई। साथ में अन्य अभिभावक भी उसके साथ हो लिए। बच्चों के विद्यालय की बस में चढ़ते ही सबसे पहले शीतल ने नगरपालिका में फोन कर उन्हें तुरंत आने की प्रार्थना की।

दो घंटे के अंदर वहाँ की सफाई तो हो गई किन्तु शीतल आज के हादसे के बाद काफी विचलित लगी। उसने गली के सभी अपार्टमेंट के सूचना पटल पर अध्यक्ष व सभी निवासियों के साथ बैठक का अनुरोध किया और उसी दिन संध्या को बैठक रखी गई। शीतल ने सबके सामने प्रस्ताव रखा कि हम सभी को मिलकर अपनी गली की सफाई करवानी होगी और सड़क के दोनों ओर पौधों की पंक्तियाँ बनवानी होगी ताकि हरियाली के साथ–साथ सब शुद्ध हवा में श्वास ले सकें। सबका समर्थन मिलने पर बैठक में बजट निर्धारित किया गया और सप्ताह में एक बार पूर्ण सफाई की व शीघ्र ही पौधे लगाने की बात तय हुई। साथ ही गली के एक कोने में खाली पड़ी भूमि पर फूलों का बगीचा बनाने का निर्णय लिया गया।

देखते ही देखते शीतल की गली एक आदर्श गली बन गई लोग आते–जाते उनकी गली, उनके मोहल्ले को भी यूँ ही पर्यावरण के अनुकूल बनाने की बातें करने लगे! आखिर बूँद–बूँद से ही घड़ा भरता है! पहले एक गली, फिर कई गलियाँ और अंत में एक आदर्श शहर।

– डॉ. शैलजा भट्टड़, (बैंगलूरू, कर्नाटक)

वृक्ष बगावत कर देंगे

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

पर्यावरण प्रदूषण के यदि नहीं सुधारे गये हाल।
तो वृक्ष बगावत कर देंगे, जल भी कर देगा हड़ताल।।

पेड़–पेड़, डाली–डाली के
अंग भंग करते जाते।
बहु मंजिली बना इमारत
काट–काट वन, इतराते।।
आम, नीम, पीपल के देवता
भर–भर आहें चुप–चुप हैं
जंगल अब मैदान बन रहे
एक रात में गुपचुप हैं।।

अंधाधुंध जंगल कटने पर, नहीं किसी को है मलाल।
तो वृक्ष बगावत कर देंगे, जल भी कर देगा हड़ताल।।

रोज करोड़ों लीटर धुआँ
ईंधन का नभ में जाता।
विष की काली चादर से
अंबर भी ढँक–ढँक जाता।।
पर्यावरण प्रदूषण से
ओजोन परत है टूटी।
ऋतुचक्र अनियमित होने से
हाय! प्रकृति भी रूठी।।

इसी तरह हर रोज नये हम खुद ही बुनते मकड़जाल।
तो वृक्ष बगावत कर देंगे, जल भी कर देगा हड़ताल।।

एक वृक्ष काटें तो चटपट
तीन नये लगवाएँ।
कैसे भी हो किसी तरह से
वृक्ष न घटने पाएँ।।
नई पीढ़ी को जल जंगल
जमीन का अर्थ बताएँ।
फैल न पाये कहीं प्रदूषण
बच्चों को समझाएँ।।

प्रकृति विरोधी शैतानों की फिर भी गलती रही दाल।
तो वृक्ष बगावत कर देंगे, जल भी कर देगा हड़ताल।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

पेड़ लगाओ

– पंडित गिरिमोहन 'गुरु'

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ।
पेड़ हमें हरियाली देंगे।
जीवन को खुशहाली देंगे।।

खुशबू वाले पेड़ लगाओ।
वातावरण शुद्ध कर देंगे।
नई ताजगी से भर देंगे।।

पेड़ों को निज मित्र बनाओ।
आम, अशोक, नीम की छाया।
कर देती है शीतल काया।।

बचो धूप से छाया पाओ।
जीते जी ऑक्सीजन देंगे।
सूख गए तो ईंधन देंगे।।

ताजी हवा दवा सी पाओ।

– होशंगाबाद (म. प्र.)

वृक्ष का आरोप

– उमेशचन्द्र चौहान

जीवन की मैं प्रमुख कड़ी हूँ, मुझसे मिले हवा पानी।
सजती मुझसे वसुन्धरा की, हरी भरी चूनर धानी।।
मैंने अपनी वंश वृद्धि से,
कभी नहीं संहार किया।
लाठी, पत्थर मैंने खाए,
पर फल ही उपहार दिया।।
चट्टानें हों, या दलदल हो या कि जमीं रेगिस्तानी।
प्यासा भूखा, मुरझा सूखा, पर तुमसे ना माँगा पानी।।
जड़ या तना, फूल, फल, डाली,
सब खा तुमने भूख मिटा ली।
फिर भी पैनी लिए कुल्हाड़ी,
हर दिन दुनिया मेरी उजाड़ी।।
नहीं बचेगी जब वनस्पति, सोचो उस दिन क्या खाओगे ?
भूखे प्यासे इसी धरा पर, तड़प-तड़प कर मर जाओगे।।
वृक्ष लगाने का आडंबर,
क्यों करते हो ऐ नादानो!
बात पते की मैं कहता हूँ,
बनो सयाने मेरी मानो।।
जहाँ दिखूँ मैं युवा, हरा-सा, मेरे संग फोटो खिंचवा लो।
अगर लगाओ तो रक्षित कर, गर्मी में तो पानी डालो।।
या उगने दो मुझे स्वयं ही,
करो न मेरा तुम रोपण।
सौ-सौ पौधे मार चुके हो,
अब मत रोपो हे जन-गण।।
या कि रोपना मात-पिता, गुरु या पुरखों की यादों में।
एक बार तुम रोप के देखो, मुझको सावन-भादों में।।
मुझे मिले अपनत्व तुम्हारा,
तब कोई काट ना पाएगा।
कुटुंब-पड़ौसी, नाती-पंती
जग मेरे फल पाएगा।।

– टिमरनी (म. प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'वृक्ष' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

गुरु महिमा

– घनश्याम मैथिल 'अमृत'

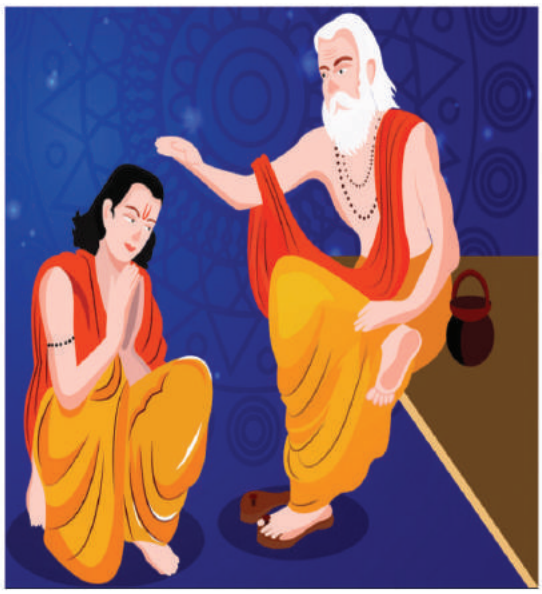

गुरु की महिमा निशि-दिन गाएँ,
हर दम उनको शीश नवाएँ।
जीवन में उजियारा भर लें,
अँधकार को मार भगाएँ।
सत्य मार्ग पर चलना बच्चो!
गुरुदेव हमको सिखलाएँ।
पर्यावरण बिगड़ न पाए,
धरती पर हम वृक्ष लगाएँ।
पानी अमृत है धरती का,
बूँद-बूँद हम रोज बचाएँ।
सिर्फ जिएँ न अपनी खातिर,
काम दूसरों के भी आएँ।
मात, पिता, गुरु, राष्ट्र की सेवा,
यह संकल्प सदा दोहराएँ।
बातें मानें गुरुदेव की,
अपना जीवन सफल बनाएँ।

– भोपाल (म. प्र.)

मुन्नी शाला जाऐगी

– उमा माहेश्वरी

मुन्नी शाला जाएगी, मुँह पर मास्क लगाएगी।
अभी वो खाने का डिब्बा, नहीं बाँट पर पाएगी।।
बात पास में घुस-घुस कर, अभी न होगी खुस-पुस कर।
लगे हाथ जो इधर-उधर, सेनेटाइज फुस-फुस कर।
कोरोना से बचने की, सारी जुगत लगाएगी।।
घर जाकर कपड़े बदले, पैर-हाथ-मुँह सब धो ले।
रोज काम यह करना है, बिना किसी के भी बोले।
कपड़े सब धुलवाएगी, कोरोना को भगाएगी।।
करना रोज सरल व्यायाम, नाक पकड़कर प्राणायाम।
ताजा भोजन, फल, सब्जी, खाए पौष्टिक सुबहो-शाम।।
बाजारों में बिकने वाले, खाने नहीं वो खाएगी।।

– इन्दौर (म. प्र.)

चूहा बना शेर

– डॉ. हनुमान प्रसाद 'उत्तम'

राजा शेर की सभा प्रतिदिन नदी के किनारे एक पेड़ के नीचे लगा करता था। उस दिन सभा में खरगोश, बिल्ली, बंदर, चीता और हाथी सब आकर अपनी-अपनी जगह बैठ गए थे। राजा शेर के लिए बना ऊँचा आसन अभी तक खाली थी। अचानक सारे जानवर चौंक गए। कहीं से आकर एक चूहा राजा शेर की चौकी पर चढ़ गया था और सभा के जानवरों पर दाँत किटकिटा रहा था। बिल्ली ने भी उसे देखा। उसे देखकर बिल्ली के मुँह में पानी भर आया। पर गुस्से में काँपते चूहे को देखकर वह ठिठक गई और शिकार के लिए आगे बढ़ी।

खरगोश के कान में बंदर ने कहा– ''लगता है यह चूहा अँधा है। इसको बिल्ली दिखाई नहीं दे रही है। वरना यह बिल्ली को देखते ही भाग जाता।''

इतने में चूहा चीखा– ''अरे बंदर! तुझे पता नहीं सभा में कानाफूसी करना मना है। जो कुछ कहना है जोर से कहो।''

यह सुनकर लगभग सारे जानवर डर गए। यह क्या बला है? चूहो होकर यूँ गरज रहा है? नहीं, यह चूहा नहीं हो सकता। किसी भयानक जीव ने चूहे की खाल ओढ़ रखी है। यह तो राजा की चौकी पर भी बैठा है। क्या यह हमारा नया राजा है?''

चूहा फिर चीखा– ''आज से मैं सबका राजा हूँ। तुम्हारा पहले वाला राजा शेर डर कर अपने बिल में जा घुसा है। वह कभी बाहर नहीं आएगा। तुम सबको मेरी गुफा पर आकर हाजिरी देनी होगी। अगर किसी ने हमारा आदेश नहीं माना, तो हम उसे जंगल से निकाल देंगे।

इस घोषणा से हाथी तो इतना घबरा गया कि वह दौड़कर नदी पर गया और अपनी सूँड से पानी खींच लाया। उसने घबराहट में सारी पानी चूहे पर छोड़ दिया। चूहे के लिए तो यह बाढ़ आने के बराबर था। इतने में वहाँ राजा शेर आ गया। सभासदों ने उसे सारी घटना सुनाई। शेर जोर से हँसकर बोला– ''तुम सबको एक छोटे से चूहे ने मूर्ख बना दिया देखो तो, वह चूहा मर गया या जीवित है।''

चूहा मरा नहीं था। वह बेहोश हो गया था। अब उसे होश आ गया था। उसे उठाकर राजा शेर के सामने लाया गया। वहाँ बिल्ली को देखते ही वह उछला और पास के एक बिल में जा छिपा। उसकी इस छलांग पर सारे जानवर हँसने लगे। किसी तरह चूहे को मनाकर शेर ने उसे बिल से बाहर बुलाया और पूछा– ''अचानक तुम्हारा दिमाग क्यों खराब हो गया था?''

इतने में वहाँ चुहिया आ गई। सच्चाई इस तरह बताई– ''महाराज! यह भेड़िया जंगल में नशे की गोलियाँ बेचता है। बहुत से जानवर उस गोलियों के आदी होकर बेकार हो गए हैं। इस चूहे ने जो हरकत की थी, वह भी इन गोलियों के नशे के प्रभाव में की थी। हमें क्षमा कर दें।''

यह सुनकर राजा शेर को गुस्सा आया। उसने तुरंत सिपाहियों को भेजकर भेड़िये को पकड़वाया। शेर ने उन सभी गोलियों को आग में फिंकवा दिया व भेड़िये को कारावास का दण्ड दिया। जंगल में यह घोषणा करवा दी कि नशे की गोलियाँ बेचना और खाना मना है क्योंकि चूहे के कारण जंगल में फैलने जा रही एक बुराई का पता लग गया था इसलिए राजा शेर ने चूहे को पुरस्कार भी दिया।

– कानपुर (उ. प्र.)

जूते

– डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल

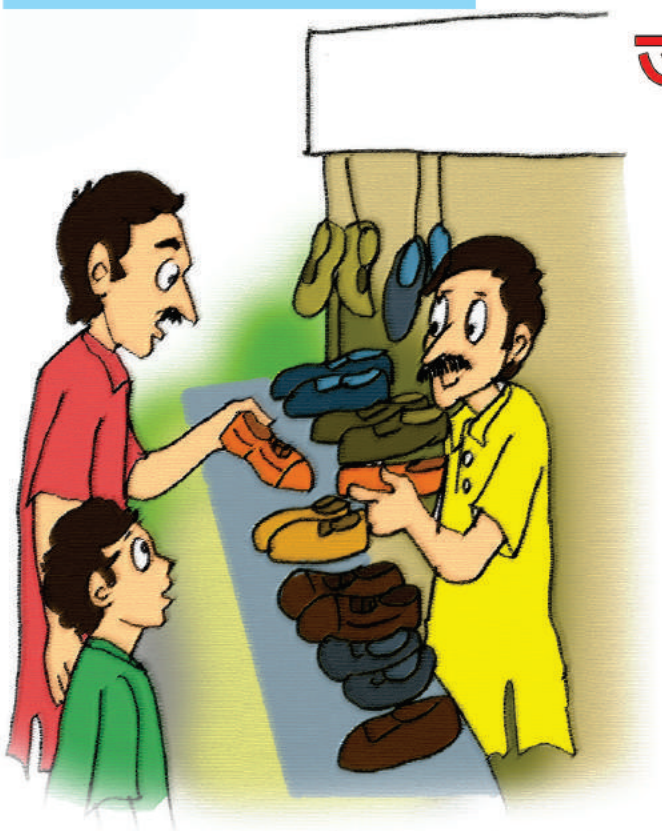

किताब दीपू के आँखों के सामने थी लेकिन दिमाग में वैभव घूम रहा था। कितने बढ़िया वैभव के कपड़े होते हैं... वह रोज क्रीजदार कपड़े पहनता है। रोज कपड़े बदलता है, मेरी तरह दो–दो दिन तक एक ही कपड़े नहीं पहनता। स्कूल का बस्ता भी उसका कीमती है, प्रतिवर्ष उसके पिताजी उसे नया बस्ता दिलाते हैं। उसका टिफिन ही देख लो। मैं तीन वर्षो से वही टिफिन लेकर जाता हूँ, कभी माँ नमक अजवाइन की पूरी भी बना देती है और उसके टिफिन में प्रतिदिन नए–नए व्यंजन होते हैं। कभी आलू के पराठे और दो चटनियाँ, आचार तो कभी दाल, चावल, सब्जी, कभी खीर–पूरी, कभी हलवा तो कभी मिठाई। मुझे तो उसके सामने अपना टिफिन खोलने की भी हिम्मत नहीं होती! लगता है जैसे मेरी इज्जत ही खराब हो जाएगी।

उसके पास एक से एक कीमती पेन है और मेरे पास सस्ते पेन... वह जन्मदिन पर पूरी कक्षा को ढेर सारी चॉकलेट, बिस्कुट बाँटता है और मैं साधारण चॉकलेट और बिस्कुट बाँटता हूँ। कितना अन्तर है उसमें और मुझमें! चार दिन पहले उसके पिताजी ने उसे बहुत कीमती जूते दिलवाए.. एक मेरे पिताजी हैं। पिछले महीने जब मैंने पिताजी को जूते दिलाने को कहा तो उन्होंने हाथ से जूते उठकार चारों ओर से देखा फिर बोले– ''बेटा! मैं इन्हें मोची के पास ले जाकर इनकी मरम्मत करा देता हूँ, पॉलिश हो जाएगी तो यह चमक उठेंगे... इस बार घर का बजट बिगड़ गया अगले माह मैं तुझे नए जूते दिलवा दूँगा।''

वह भी वैसे ही जूते लेना चाहता था जैसे वैभव ने लिए थे। दो दिन से शाम को वह अकेला बाजार जाकर शोकेस में लगे जूते देख रहा था। उसने मन ही मन जूते भी पसंद कर लिए थे। उसने इधर–उधर उचककर बहुत प्रयत्न भी किया, कि उसका मूल्य भी देख ले, लेकिन उसे मूल्य दिखाई नहीं दिया। चाहे जितनी भी मुझे जिद्द करनी पड़े, पर इस बार मैं वैभव से अच्छे जूते लूँगा। मोजे भी उससे अधिक अच्छे खरीदूँगा। वैभव और उसमें केवल एक ही अन्तर है कि हमेशा वह उससे अच्छे नंबर लेकर आता है। जबकि वैभव को तो उसके पिता ने ट्यूशन भी लगा रखी है। मुझे तो माँ और पिताजी ही पढ़ाते हैं। यह सोच कर क्षण के लिए उसके चेहरे में चमक आ गई थी। लेकिन अगले ही पल दिमाग में फिर वैभव के चमकदार कीमती जूते आ गए और उसके चेहरे की चमक जाती रही। वैभव एक महीने में दो–तीन पिक्चर अपने माँ–पिताजी के साथ देख लेता है, होटल में खाना भी खाता है। टैक्सी में घूमता है और एक मैं हूँ... छः माह से कोई पिक्चर ही नहीं देखी। न ही माँ और पिताजी जाते हैं और न ही वह मुझे जाने देते हैं। उसे मन ही मन अपने जीवन से चिढ़ होने लगी थी।

स्कूटर ही आहट हुई तो उसका सोच टूटा। पिताजी आ गए थे। अंदर आकर वे माँ से बोले– ''चाय पिला दो फिर मैं दीपू को साथ लेकर बाजार जाऊँगा, आज वेतन मिल गया है इसलिए उसे जूते दिलवा देता हूँ।'' वह खुशी से झूम उठा था।

वह पिताजी के स्कूटर की सीट पर बैठा था और आँखों के सामने शोकेस में रखे जूते घूम रहे थे। ''पिताजी! न्यू मार्केट में मनोहर शू वाली दुकान से मेरे मित्रों ने जूते खरीदे हैं।''

''ठीक है बेटा... वही चलते हैं!''

दुकान पर पहुँचते ही सेल्समैन खूब सारे डब्बे ले आया और खोल-खोल कर उन्हें पहना कर दिखाने लगा। ''क्यों भाई.... यह जूते कितने के हैं?''

''साहब, उन्नीस सौ पचास रुपए के।''

मूल्य जानकर पिताजी उसे धीरे से समझाने लगे-''बेटा! मैं तुम्हें दूसरी दुकान में लेकर चलता हूँ, यह जूते बहुत मँहगे हैं।'' दोनों उस दुकान के बाहर निकलने लगे। वैभव के पिताजी और मेरे पिताजी एक ही पद पर है लेकिन दोनों में कितना अंतर है? उसके पिताजी उसकी हर माँग पूरी करते हैं। उसकी हर वस्तु कितनी अच्छी होती है और मेरे पिताजी, हर वस्तु को खरीदते समय कितना सोचते हैं? अपने मनपसंद जूतों को ना खरीद पाने के कारण दीपू मन ही मन झल्ला रहा था और अपने पिताजी की कंजूसी पर उसे क्रोध भी आ रहा था।

''बेटा! मैं जो कपड़े पहनता हूँ, उससे अच्छे तुम्हें पहनाता हूँ.... तुम थोड़ा धीरज रखो, मैं तुम्हें अच्छे जूते दिलवा दूँगा बेटा! ईमानदारी के पैसों को व्यर्थ में खर्च करने की मैं हिम्मत नहीं जुटा पाता! तुम बड़े होकर समझोगे कि ईमानदारी और बेईमानी के धन में क्या अंतर होता है?'' अपनी बात पूरी कर पिताजी ने उसके सिर पर हाथ रख दिया। वह चाहकर भी अपनी नजर ऊपर नहीं कर पा रहा था। उसके मन में अपने और वैभव के पिताजी के स्थान बदलने लगे थे।

- इन्दौर (म. प्र.)

कविता

कोरोना वायरस आया

- डॉ. सरोज गुप्ता, इन्दौर (म. प्र.)

माँ गोद नहीं लेती अब,
नहीं हाथ से खिलाती खाना।
बस्ता छीन रेक पर रखती,
कहती स्कूल नहीं अब जाना।।

नहीं मित्रों से मिलना अब,
नहीं खेल मैदान में जाना।
दूर-दूर रहकर ही अब,
मोबाइल से तुम बतियाना।।

मैंने पूछा माँ क्योंकर,
तुमने ऐसा स्वभाव बनाया।
जब भी मोबाइल लिया हाथ में,
छीन के तुमने मुझको रुलाया।।

सजा-सजा के बस्ता मेरा,
लन्चबॉक्स दे स्कूल पठाया।
खेलो, पढ़ो और स्वस्थ रहो,
यही सदा ही सबक सिखाया।।

माँ बोली बेटा! आज तुम,
हैण्डवाश कर मॉस्क लगाना।
दूर-दूर रहकर ही मेज पर,
अब से तुम पीना औ' खाना।।

नहीं बुलाना अब तुम किसी को,
नहीं किसी के घर है जाना।
कोरोना वायरस आया,
मिलकर 'सरोज' है उसे भगाना।।

ध्यान

– डॉ. प्रेम भारती

योग के आठ अंगों में आसन, प्राणायाम और ध्यान, तीन ऐसी प्रक्रियाएँ हैं, जिन्हें वैज्ञानिकों की प्रयोगशाला में परखा जा सकता है। विज्ञान में परीक्षण 'एक्सपेरिमेंट' शब्द का पर्याय है। 'एक्सपेरिमेंट' शब्द एक्स (निरंतरता) + पेरिल (कष्ट उठाना), इन दो शब्दों का मेल है, जिसमें निरंतरता तथा अभ्यास में कष्ट उठाना प्रमुख है।

'ध्यान' करने में अनेक बाधाएँ आती हैं। प्रकृतिगत स्वभाव होने से इन्हें बता पाना मात्र संकेत तक ही सीमित है; कोई भी भाषा उसे व्यक्त नहीं कर सकती। यदि ध्यान के पूर्व प्राणायाम नहीं सधता है तो ध्यान भी ठीक से नहीं हो पाता है। प्राणायाम की प्रक्रिया यदि केवल देह तक सीमित रहती है, तो उससे रोगों में सुधार तो होगा किन्तु, प्राणायाम का यह प्रभाव सतही है। इसका यथार्थ और वास्तविक प्रभाव तो चेतना की सूक्ष्म परतों पर देखा जाना चाहिए, जिसके कारण चित्त शुद्ध होता है और आत्मा की अमर ज्योति पूरे अस्तित्व में फैल जाती है।

महर्षि अरविन्द ने बड़ौदा निवास के समय ध्यान के पूर्व प्राणायाम का ऐसा ही अभ्यास किया था। वे दीर्घकाल तक उसका अभ्यास करते रहे किन्तु, लाभ नहीं मिला। एक दिन अचानक उनकी स्थिति बदल गई। वे कहते हैं, इस स्थिति के पूर्व मुझे कविता लिखने में काफी सोच-विचार करना पड़ता था किन्तु, अब कविता स्वत: अवतरित होने लगी। मैं तो केवल उसका माध्यम बन गया। इस प्रकार मेरा समूचा जीवन रूपान्तरित हो गया।

इस दृष्टि से विचार करें, तो हम पाएँगे कि ऐसा ध्यान बहुत ही कम लोग कर रहे हैं कि जिससे उनकी चेतना निरंतर परिमार्जित, पवित्र और रूपान्तरित होती रहे। ध्यान की प्रक्रिया का स्वरूप व्यक्ति के अंतस् की विशेषता के अनुरूप होना चाहिए। ऐसा तभी संभव है जब उसकी असीमता व्यापक हो और उसका उद्देश्य उच्चतम् हो।

असीमता का भाव उसमें संवेदना की सृष्टि करता हो। यदि ध्यान के प्रयोग को किसी व्यक्ति पर आरोपित किया जाता है, तो उसके लिए ध्यान बोझ बन जाएगा। ध्यान के क्षण विश्रांति न बनकर व्यायाम बन जाएँगे। अत: अपनी मान्यताओं, आग्रहों, प्रतीकों आदि से मुक्त होकर साधक को ध्यान का विषय चुनने की प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, एक प्रकृति प्रेमी के लिए प्राकृतिक सौन्दर्य ध्यान का विषय बन सकता है तो किसी दार्शनिक विचार वाले व्यक्ति के लिए कोई विचार ध्यान का विषय बन सकता है। विज्ञान के प्रयोगों से यह सिद्ध हो गया है कि ध्यान करने से अनेक भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन होते हैं। जो देह को लेकर ध्यान करना चाहते हैं, उन्हें शायद यह ठीक भी लगे किन्तु, जब तक व्यक्ति का भौतिक शरीर और उसके व्यवहार सूक्ष्म दिशा की ओर रूपान्तरित न हों, तो उसे ध्यान के स्थानान्तरण प्रयोग का वास्तविक लाभ नहीं मिलेगा।

शरीर शास्त्रियों का मत है कि, शारीरिक स्तर का यह परिवर्तन तो 'रस-स्रावों' एवं 'जीन' को नियंत्रित करके भी किया जा सकता है किन्तु, अभी तक ऐसी कोई विधा विज्ञान के हाथ नहीं लगी है, जो चेतना को प्रभावित कर सके। कुछ अपवादों को छोड़कर रासायनिक क्रियाओं द्वारा होने वाला परिवर्तन औषधि सेवन तक सीमित रहता है, उसके बंद होते ही रोगी की दशा पूर्ववत् हो जाती है। क्योंकि यह परिवर्तन

बाह्य स्तर पर होता है। ध्यान द्वारा होने वाला परिवर्तन स्थायी तथा आन्तरिक आध्यात्मिक गुण है। इस दृष्टि से ध्यान–साधना स्थूल भी है और सूक्ष्म भी हैं।

जहाँ ध्यान के प्रारंभिक चरण में साधक को अपने व्यवहार, चरित्र और विचारों का रूपान्तरण होता अनुभव होता है वहीं उसके अगले चरण में उसे चित्त की गहरी परतों में छिपे संस्कार ऊपर परत पर आते दिखाई देने लगते हैं। हालाँकि इस लक्षण का कोई भी चिह्न बाहर प्रकट नहीं होता किन्तु, ब्रह्माण्डीय चेतना से जुड़कर साधक अपनी जीवन–यात्रा में आनन्द का अनुभव करने लगता है। इस अवस्था को प्रकट करने के लिए शब्दकोश में कोई शब्द ढूँढने पर भी मिल सकता क्योंकि यह आनन्द शब्द से नहीं मौन–मुस्कान के रूप में प्रकट होता है।

इस प्रकार ध्यान का सत्य हमारी क्रिया से नहीं बल्कि, स्वभाव के रूप में हृदय में उतरने पर हमारा मन शांत हो जाने से स्वभाव के अनुसार क्रिया करने में मन को स्वतंत्रता रहती है कि वह उसे करे या न करे किन्तु, स्वभाव कोई क्रिया नहीं है। वह हम स्वयं हैं। हमारा स्वरूप है। यही शुद्ध सत्ता है। ध्यान दें, शरीर वस्तुओं से घिरा रहता है और मन उससे जुड़े विचारों से। वस्तुओं का घेरा ध्यान में बाधक नहीं है। बाधक है, मन से जुड़े विचारों का घेरा। पदार्थ केवल पदार्थ को ढँक सकता है, चैतन्य को नहीं। चैतन्य का आवरण विचार है। इसके लिए विचारों का विज्ञान जानना होगा। यह विचार–प्रवाह मन में निरन्तर बहता रहता है। एक विचार मरता है, दूसरा विचार उत्पन्न हो जाता है। विचार की इस उत्पत्ति पर रोक लगे, तो ध्यान निर्विघ्न हो जाता है।

यह कैसे संभव होगा? तो विचार करें, विचारों की उत्पत्ति बाहर की घटनाओं और वस्तु जगत से जुड़ी रहती है। यह नियंत्रण प्राणायाम द्वारा संभव होता है। एक प्रयोग कीजिए–

ध्यान में बैठकर श्वास को मौन भाव से देखते

रहें। ऐसा विचार करें, अन्दर और बाहर जो भी घटित हो रहा है, हम उसके साक्षी बन रहे हैं। हमारी कोई प्रतिक्रिया नहीं हो तो धीरे–धीरे अपने भीतर श्वास के स्पंदन और हृदय की धड़कन हमें सुनाई देगी और ध्यान सघन होने लगेगा। बाहर ध्वनि होगी, पर भीतर नीरवता बढ़ने लगेगी और एक अलौकिक आनंद का अनुभव होने लगेगा। शब्द और विचार के इस शून्य में चेतना की दिशा बदलने लगेगी। ध्यान के इस शून्य में चैतन्यता का अनुभव होगा। चित्त की चंचलता शांत होगी। अभी तक जो संसार सामने था, वह पीछे होगा और चेतना जो पीछे थी, वहाँ आँख जमेगी। रास्ता वही है। बस मुड़ने की देर है। केवल विपरीत दिशा में चलना है। जो मार्ग संसार में लाता है, वही आत्मा तक ले जाता है। यह सामर्थ्य सबके भीतर है। ध्यान इसी को पाने की राह है।

अत: अच्छा स्वास्थ्य, निर्मल मन, संतुलित मस्तिष्क ध्यान साधना के प्रारम्भिक परिणाम हैं। जो अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने को शांत और प्रसन्न लगते हैं, वे ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकने में सफल होते हैं।

– भोपाल (म. प्र.)

हाथी का अण्डा

– आशीष श्रीवास्तव

ओह! वो देखो, गेंद!!! चलो खेलेंगे। हाथ के संकेत से आँखे चौड़ी करते हुए जैसे ही शांभवी ने अपनी सहेलियों को बताया तो वे दौड़ पड़े गेंद की ओर। लेकिन, पास जाकर देखा तो वह कोई फल जैसा ज्ञात हुआ। शांभवी ने सभी को दूर हटा दिया। कहने लगी रुको.. रुको! कोई भी अनजान वस्तु को छूना मना है। ये बम भी हो सकता है। सब बच्चे दूर हट गए। उनमें से एक बच्ची अंशिका ने दूर जाकर जमीन पर पड़े कुछ पत्थर हाथ में उठा लिये और उस गेंदनुमा फल पर मारने की चेष्टा करने लगी। एक पत्थर जैसे ही उस फल पर पड़ा तो वह फट् की ध्वनि के साथ कुछ हिला–डुला और फिर स्थिर हो गया।

तब तक वहाँ गुरुजी भी आ पहुँचे। उन्होंने कुछ देर पहले ध्यान से उसे देखा फिर कुछ उपाय सोचते हुए पास ही पड़े एक लम्बे बाँस से उस फल को टटोला। जब लगा कि ये फल ही है कुछ और नहीं तो पास पहुँच गए। सभी बच्चे भी आसपास। गुरुजी ने यहाँ–वहाँ देखा, फिर फल को उठा लिया। कहने लगे– ''चलो इसे पेड़ की छाया में बैठकर खाएँगे।'' गुरुजी बच्चों सहित कुछ कदम चले फिर उन्होंने वह फल तेजी से दूर एक पत्थर पर दे मारा। फट् की ध्वनि गूँजी और फल दो टुकड़े होकर बिखर गया। पास जाकर उन्होंने देखा तो वह फल खोखला..! सभी की जिज्ञासा बढ़ गई। बच्चे पूछने लगे। ''गुरुजी ये क्या? ये क्या? फल में तो गूदा ही नहीं।''

गुरुजी की भी एकदम से कुछ समझ में नहीं आया। कहने लगे चलो और देखते हैं शायद कुछ और फल मिल जाएँ। खोखले साबुत फल की पहेली बूझने से पहले ही हाथी अभ्यारण्य घूमने पहुँचे बच्चों को हाथियों का झुण्ड दिखाई दे गया। सभी बच्चे उत्साहपूर्व कौतूहल से भर उठे। उन्होंने पहली बार इस तरह हाथियों का झुण्ड स्वच्छंद विचरण करते देखा। हाथी के छोटे–से बच्चे से लेकर दो सफेद बाहर निकाले दाँत, बड़े–बड़े आगे–पीछे हिलते कान, मोटे गोल स्तम्भाकार पाँव और सूँड–पूँछ हिलाते पेड़ों की पत्तियाँ खाते विशाल हाथी एक साथ इतनी बड़ी संख्या में बच्चों ने पहले कभी नहीं देखे।

हाथियों के उत्पात से प्रजा को बचाने के लिए ही सरकार ने जनभागीदारी से नये हाथी अभ्यारण्य का हाल ही में निर्माण कराया तो बच्चे ही नहीं बड़ों के लिए भी हाथी अभ्यारण्य दर्शनीय बन पड़ा। विद्यालय के गुरुजी ने बताया कि अब वे दिन हवा हुए जब गली, मोहल्ले में महावत हाथी को लेकर चले आते थे और बच्चों में चहल–पहल, उत्साह बढ़ जाया करता था। अब महानगरों में न केवल हाथी को लाना, बल्कि बंदर–भालू के करतब दिखाना भी प्रतिबंधित कर दिया गया है।

गुरुजी की बात पूरी हुई भी नहीं थी कि फिर वैसा ही एक और फल हाथी अभ्यारण्य में दिखाई दिया। वे सभी जिज्ञासा लिये फल तक पहुँचे और उठाकर देखा तो फल पूरा फल की तरह ही था, लेकिन जब उसे फोड़ा गया तो वह भी खोखला ही निकला। बच्चों की जिज्ञासा बढ़ गई। वे तरह-तरह की बातें करने लगे। गुरुजी आसपास और ऊपर पेड़ों को देखकर अनुमान लगाने लगे कि ये भला क्या हो सकता है?

तभी छोटी बच्ची अनुष्का ने कहा- ''कहीं ये हाथी का अण्डा तो नहीं।'' इतना सुनकर सभी बच्चे एकदम से हँस पड़े। गुरुजी भी बच्ची की भोली-सी बातें सुनकर मुस्कुरा दिए। कहने लगे- ''बेटा! हाथी अण्डे नहीं देता, वह स्तनधारी जीव है।'' फिर फल को घुमाते हुए कहने लगे ये कबीट का फल हो सकता है, जिसे कैथा भी कहते हैं।'' शांभवी ने पूछा तो क्या बेलफल और कबीट एक ही तरह के फल होते हैं? गुरुजी ने कहा- ''नहीं! कबीट का फल और पेड़ अलग होता है और बेलफल और बेलपत्री का पेड़ अलग होता है। कबीट का फल अधिक कड़क, खुरदुरा-हरापन लिये होता है और खाने पर स्वाद खट्टा होता है। जबकि बेलफल पीला-चिकनाहट नारंगीपन लिये थोड़ा कम कठोर होता है। पके बेलफल मीठापन लिये हुए होते हैं।

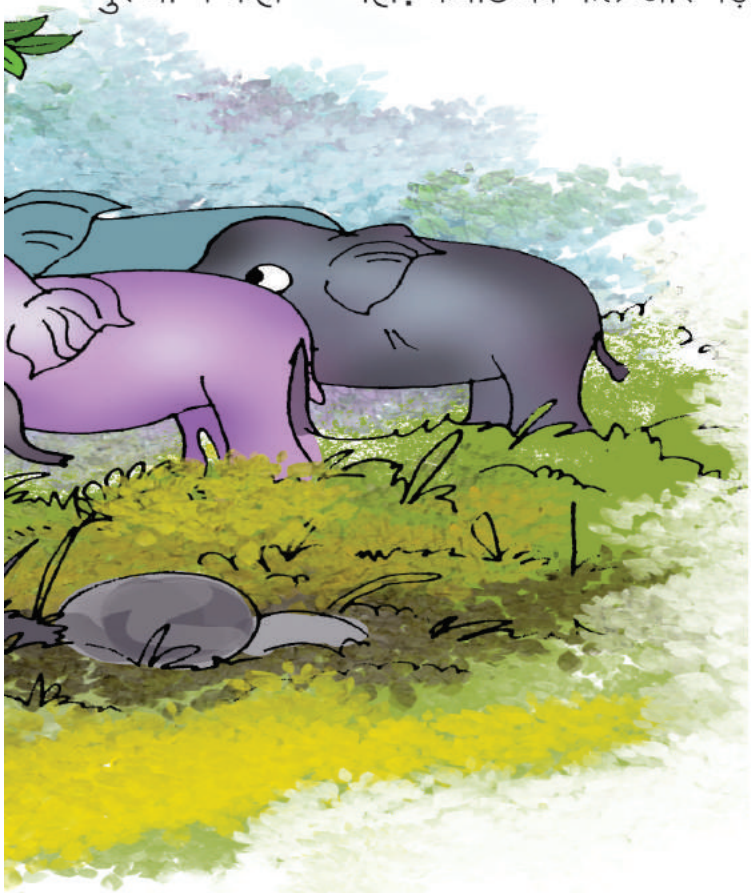

सभी बच्चे दूर हाथियों को देखते हुए अभ्यारण्य में टहलते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे कि पास में ही उन्हें एक अलग बाड़े में सामने की ओर हरे-पीले बाँस का बना कच्चा घर दिखाई दिया। बाहर पेड़ों की घनी छाँव में लटके एक लकड़ी की पट्टी पर लिखा था दीपक आचार्य का आश्रम। गुरुजी सभी बच्चों को वहाँ लेकर पहुँचे और उन्हें खोखले फल की बात बताई। आचार्य जी जंगल ही नहीं, हाथियों के बारे में भी बहुत कुछ जानते थे इसलिए वे हौले-से पहले तो मुस्कुरा दिए। फिर उन्होंने बताया कि जो खोखले फल आपको मिले दरअसल वे कबीट के फल ही हैं, जिन्हें लकड़ी सेब यानी वुड एप्पल या हाथी सेब भी कहा जाता है। ये फल बाहर से बहुत कठोर होता है, बेल के फल से भी बहुत अधिक कठोर... इसका अंदरूनी भाग नर्म होता है। हम बचपन में जंगलों में घूमते हुए जब भी इस फल को पेड़ पर लदा देखते, तोड़ लाते और पत्थरों पर पटककर इसे फोड़ दिया करते। इसके भीतर का खट्टा हिस्सा बड़े चाव से नमक और लाल-मिर्च लगाकर खाया करते थे। माँ सिलबट्टे पर इसकी चटनी भी तैयार करती थी।

इस फल की एक विशेष बात यह है कि हाथी जब इस फल को खाता है तो एक जादू होता है... जादू भी ऐसा कि देखने वाले आश्चर्यचकित रह जाएँ। इस फल को खाने के बाद जब हाथी मल त्यागता है तो मल के साथ यह फल भी बाहर निकल आता है, ठीक उसी स्थिति में जिस स्थिति में ये पेट के भीतर गया था। मल त्याग के बाद निकले इस फल को फोड़कर देखेंगे तो फल पूरी तरह से खोखला हो जाता है। आचार्यजी

बताते–बताते कुछ देर रुके तो शांभवी ने कहा– ''हाँ आचार्य जी! हम यही तो जानना चाहते हैं कि हाथी ने जब फल खा लिया तो वह खोखला कैसे हो गया? फूटा क्यों नहीं?'' आचार्य जी के चेहरे की मुस्कान कुछ और चौड़ी हो गई। कहने लगे: ''वास्तव में इस फल की बाहरी सतह पर बारीक–बारी छेद होते हैं जो हमें नहीं दिखाई देते हैं। जब हाथी इसे पेट में निगलता है और पाचक क्रिया शुरू होती है तो पेट में उपस्थित पाचक एंजाइम और एसिड्स धीरे–धीरे इस फल के बारीक छिद्रों से होते हुए भीतर तक घुस जाते हैं और फल के भीतरी भाग को पचा देते हैं और बाहरी भाग मल के साथ बिना फूटे ही बाहर निकल जाता है जो पूरी तरह से खोखला होता है।''

इतनी महत्वपूर्ण और रोचक जानकारी मिलते ही सभी बच्चों के चेहरे खिल उठे। वे कहने लगे– ''धन्यवाद आचार्य जी! आपने हमारी आँखें खोल दीं।'' बच्चे दूसरी ओर से हाथी अभ्यारण्य से बाहर निकल ही रहे थे कि उन्हें सामने एक तीन संयुक्त पत्तियों से घिरा पेड़ दिखाई दिया। गुरुजी ने बताया कि– ''देखो बच्चो! यह है बेल का पेड़, इस वृक्ष में लगे पुराने पीले पड़े हुए फल एक वर्ष के बाद फिर से हरे हो जाते हैं इसलिए इसे दिव्य वृक्ष भी कहते हैं। इसके फल को सत्यफल, सदाफल, महाफल, गन्धफल, लक्ष्मीफल, पीतफल भी कहा जाता है जो पेट के लिए लाभदायक होते हैं।''

हाथी अभ्यारण्य में हाथियों को देखने के अलावा कबीट और बेलफल के बारे में रोचक जानकारी पाकर बच्चे प्रफुल्लित हो उठे। कहने लगे– ''यह जानकारी वे अपने घर जाकर भी अवश्य बतायेंगे।''

– भोपाल (म. प्र.)

चटपटी कविता

– ओम उपाध्याय

न कर खटखट
पी जा दूध
गट गट गट!

अगड़म
बगड़म
न कर खेल में
कोई तिकड़म!

खिड़की पर
मत कर
खट–खट
भाग यहाँ से
झटपट सरपट!
मुँह से न
कर फट–फट
जैसे करती

फटफटी
खत्म हुई
अटपटी
कविता चटपटी

– इन्दौर (म. प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र में चयनित सामग्री, साजसज्जा और प्रस्तुति आपके लगन, परिश्रम और इच्छाशक्ति को दर्शाती है। देवपुत्र के निरंतर प्रकाशन पर बधाई। शुभकामनाएँ। ऐसे समय जबकि कई बाल पत्रिकाएँ बंद हो गई या डिजिटल फार्मेट में आ गईं, आपके द्वारा देवपुत्र का प्रकाशन नि:संदेह प्रशंसनीय है। देवपुत्र का यह अंक न केवल हमने पढ़ा बल्कि इससे मोहल्ले के अन्य बच्चों को भी परिचित कराया/दिखाया/पढ़ाया। वे यह जानकर प्रफुल्लित हुए कि उनके ही मोहल्ले के भैया की कहानी इसमें प्रकाशित हुई है तो वे और भी उत्सुक दिखाई दिए। कुछ बच्चे तो पहले से ही देवपुत्र के बारे में जानते हैं, परन्तु कुछ को बताया गया। वे पहली बार इतनी अच्छी बाल पत्रिका को अपने हाथों में पाकर प्रसन्न हो गए। आपको एवं समस्त संपादकीय टीम को बहुत–बहुत धन्यवाद। आभार– **आशीष अनमोल (भोपाल, म. प्र.)**

☺ छ: अंगुल मुस्कान ☺

फिल्म निर्माता– तुम अनपढ़ व गँवार हो फिर भी फिल्म में रोल माँग रहे हो।

आदमी– तो क्या हुआ साहब? मैं फिल्म में अनपढ़ व गँवार वाला ही तो रोल माँग रहा हूँ।

– प्रीति साहनी, (नई दिल्ली)

एक घर में चोरी की घटना हो गई। इन्सपेक्टर ने घर के मालिक से पूछा कि किस चीज को चोर न छुआ था। जिससे चोर के अंगुलियों के निशान लिए जा सकें।

क्या मेरे गालों से निशान लिए जा सकते हैं? जाते–जाते चोर ने इन्हीं गालों पर थप्पड़ मारे थे।

– प्रेम प्रकाश, पटना (बिहार)

ओह!
आइसक्रीम

चित्रकथाः देवांशु वत्स

चुटकी और चिकू

– मेघा कदम

चिकू चिड़िया अपने माता–पिता के साथ रहती थी। उसे घर पर बैठना बिल्कुल पसंद नहीं था। इसलिए वह दिनभर इधर–उधर घूमती रहती थी। पढ़ाई में भी काफी अच्छी थी। अपना पूरा अभ्यास समय पर समाप्त कर खेलने लग जाती।

एक बार ऐसे ही घूमते–घूमते वह बहुत दूर चली गई। गर्मी का मौसम था। तेज धूप निकल रही थी। चिकू को बड़ी प्यास लगी थी। घर भी बहुत दूर था।

वह चारों ओर देखने लगी की कहीं उसे पानी मिल जाये। लेकिन हर ओर इमारतें ही इमारतें थीं। उसे कहीं पर भी पानी नहीं मिला।

वह थकी हुई घर लौट आई। उसका गला पूरी तरह से सूख गया था। जैसे ही उसने मटके का ठंडा पानी पी लिया, उसकी जान में जान आ गई।

माँ ने कहा– ''कितनी बार कहा तुझसे कि इतनी दूर मत जाया कर! तू है कि मानती ही नहीं।''

''लेकिन माँ! मैं तो तितलियों के साथ खेल रही थी। उनके पीछे भागते–भागते मुझे होश ही नहीं रहा की मैं कितनी दूर चली आई हूँ।''

''ठीक है। इसके आगे तू पानी की बोतल अपने गले में लटका कर ले जाया कर। जब प्यास लगेगी, पानी पी लेना।''

''अच्छा माँ!'' चिकू ने प्यार से कहा।

अगली दो तीन बार चिकू बाहर घूमने गई, तो उसने पानी की बोतल अपने गले में लटका ली। लेकिन उस बोतल के कारण वह ठीक से उड़ नहीं पा रही थी। इसलिये उसने अगली बार बोतल साथ में ले जाना बंद कर दिया।

चिकू की आज भी तितलियों से मुलाकात हुई। और वह फिर से खेलने लगे। उड़ते–उड़ते आज भी वह दूर तक चली गई।

माँ ने देखा की चिकू की पानी की बोतल तो घर पर ही है। ''इस चिकू को मैं कैसे समझाऊँ? आज भी बोतल ले जाना भूल गई। पता नहीं अब कहाँ चली गई होगी? प्यास लगेगी तब पता चलेगा। अब मुझे ही उसके लिये पानी लेकर जाना होगा।''

चिकू की माँ ने गले में बोतल लटका ली। सिर पर छत्री अटकाई, आँखों पर धूप का चश्मा चढ़ाया और चल दी चिकू को ढूँढ़ने।

यहाँ चिकू को बड़ी प्यास लगी थी। वह थक गई थी। इसलिये वह एक गॅलरी में जा खड़ी हो गई। उसने सोचा थोड़ी देर छाँव में आराम कर वह अपने घर लौट जायेगी।

''चुटकी! जरा पौधों को पानी तो डालना।'' चुटकी की माँ ने चुटकी से कहा।

चुटकी एक चुलबुली सी लड़की थी। उसे पेड़ पौधों से बड़ा लगाव था। वह अपने गॅलरी में रखे पौधों को पानी देती थी।

पानी देते–देते उसने देखा कि चिड़िया का

छोटा–सा बच्चा गॅलरी में खड़ा है।

अरे! कितना प्यारा बच्चा है। ''तुम्हारा नाम क्या है?''चुटकी ने पूछा।

''मेरा नाम चिकू है।'' चिकू ने हलकी आवाज में कहा।

''तुम तो बहुत कमजोर लग रहे हो। रुको, मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाती हूँ।''

अनाज के दाने खाकर चिकू ने पानी पी लिया। अपने पँख फड़फड़ाकर चिकू ने चुटकी को धन्यवाद दिया।

''तुम कितनी अच्छी हो चुटकी। मुझे तो बहुत प्यास लगी थी। तुम्हारे कारण अब मुझे बहुत आराम मिला।''

''चिकू! अब तुम यहाँ प्रतिदिन आया करो। मैं तुम्हारे लिये दाना और पानी रख दिया करूँगी। फिर हम खूब खेलेंगे। बड़ा आनन्द आयेगा।'' चुटकी ने कहाँ।

''हाँ बिल्कुल! तुमसे मित्रता करके मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।'' चिकू ने उत्तर दिया।

चिकू की माँ उसे खोजते–खोजते उस ओर आई और उसने चिकू को देखा। चिकू एक छोटी सी बच्ची के साथ मस्ती कर रही थी।

''तो इसे यहाँ इस लड़की ने पानी दे दिया। इसलिये आज घर की याद नहीं आई। ये बच्ची तो बड़ी प्यारी है और दयालु भी। इतनी तेज धूप में पक्षियों के लिये पानी रख देना, अच्छी बात है।'' चिड़िया ने मन ही मन कहाँ।

लेकिन अब उसे भी बड़ी प्यास लगी थी। उसने अपनी गले में लटकी बोतल में से सारा पानी पी लिया और वह अपने घर की ओर चल दी।

चिड़िया चिकू के पास उससे मिलने नहीं गई। क्योंकि उसे पता था चिकू अपनी परेशानियों का हल स्वयं निकाल पायेगी। बाहरी दुनिया हर किसी को बहुत कुछ सिखा देती है।

– चिंचवड़ (महाराष्ट्र)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

● श्री बेढब बनारसी एक बार कराची के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भाग लेने गए थे वहाँ और भी साहित्यकार आए हुए थे। चायपान करते हुए श्री अमृतलाल नागर कह रहे थे–''कल जब मैं कराची शहर में घूम रहा था तो लोगों ने मुझे जवाहरलाल समझकर घेर लिया।''

बनारसी जी चुप न रह सके। नहले पर दहला जड़ते हुए बोले– ''भाई! मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ।'' ''क्या हुआ? क्या हुआ?'' ''बताइये तो?'' लोगों के स्वर उठे। बनारसी जी गंभीर मुखमुद्रा बनाकर बोले– ''मैं शहर में घूम रहा था तो लोगों ने मुझे मोतीलाल नेहरू समझ कर घेर लिया।'' सारी सभा अट्टहास कर उठी।

● बेढब जी एक सभा में देर से पहुँचे। लोगों ने टीका टिप्पणी की। बनारसी जी गंभीरता से बोले– ''क्या करें साहब! स्वराज्य क्या हुआ सबको स्वराज्य मिल गया। रेल वालों ने बड़ी लाईन की गाड़ी में छोटी लाईन का इंजन लगा दिया। प्रतापगढ़ जाकर पता लगा तब इंजन बदला गया। इसी में देर हो गई।''

कुछ लोगों ने हाँ में हाँ मिलाई– ''सचमुच बड़ी मनमानी हो रही है।''

लेकिन थोड़े ही पल में जैसे ही यह बात समझ में आई कि बड़ी लाईन की गाड़ी में छोटी लाईन का इंजन लग ही नहीं सकता। कोई भी अपनी हँसी न रोक सका।

राष्ट्रगीत के रचयिता बंकिमचन्द्र

– विजय सिंह माली

वन्देमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम्। मातरम्। वन्देमातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम्। मातरम्। वन्देमातरम्।

राष्ट्रगीत वन्देमातरम् भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध का बीज मंत्र है जिसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त क्रांतिवीर स्वातंत्र्य सैनिक फाँसी के फँदे पर हँसते–हँसते चढ़ गए। इस देश के राष्ट्रजीवन में वन्देमारतम् को श्रीमद्भगवतगीता जैसा असाधारण महत्व व स्थान प्राप्त हुआ है। वन्देमातरम् का उद्घोष देशभक्ति की गर्जना समझी जाती है। राष्ट्रगीत वन्देमातरम् के रचयिता थे बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म बंगाल के चौबीस परगना जिले के कांतलपाड़ा गाँव में २७ जून १८८३ को विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता यादवचन्द्र मिदनापुर के डिप्टी कलेक्टर थे। माता बड़ी स्नेहमयी साध्वी स्त्री थी। बचपन से ही रामायण–महाभारत की कहानियों ने इनके चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी शिक्षा मेदिनीपुर में ही आरम्भ हुई। ये बड़े मेधावी छात्र थे। इनकी बुद्धिमत्ता से लोग बड़े प्रभावित होते थे। शालान्त परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने हुगली के मोहसिन कॉलेज में प्रवेश लिया। महाविद्यालय की प्रत्येक परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। खेलकूद की अपेक्षा उन्हें पुस्तकों से अधिक लगाव था। संस्कृत में इनकी काफी रुचि थी। वर्ष १८५६ में उन्होंने कोलकाता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश किया। बी. ए. उत्तीर्ण कर ये डिप्टी कलेक्टर बन गए। इस बीच कानून की भी परीक्षा पास कर ली। तत्पश्चात इन्हें

डिप्टी मजिस्ट्रेट बनाया गया। बंकिमचन्द्र बड़े सजग व स्वाभिमानी अधिकारी थे। इसके कारण नौकरी के समय ये कभी भी एक ही जगह टिक न सके। परिश्रम के बाद भी ऊँचे पद तक नहीं पहुँच पाए। ३२ वर्ष तक सरकारी नौकरी करके उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

अपनी पत्नी राजलक्ष्मी देवी से उन्हें तीन पुत्रियाँ हुईं। जैसोर में इनका परिचय नामी बंगला नाटककार दीनबन्धु मित्र से हुआ। वे दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **आनंद मठ** उन्होंने अपने दीनबंधु मित्र को ही समर्पित की है। बंकिमचन्द्र ने पहले कुछ कविताएँ लिखीं फिर अंग्रेजी में एक उपन्यास लिखा। इसके बाद अपनी मातृभाषा बंगाली में लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने **बंग दर्शन** नामक मासिक पत्रिका चलाई थी। आनंदमठ उपन्यास उसी में प्रकाशित हुआ बाद में वह १८८२ में पुस्तक के रूप में छपा इस उपन्यास ने बंकिमचन्द्र को कीर्ति के शिखर पर पहुँचा दिया। बंकिमचन्द्र की लेखन शैली से बांग्ला भाषा को नया गौरव मिला। बंकिम के उपन्यास पाठको के लिए एक नई अनुभूति थे। बंगाल की जनता तो उनके पीछे दीवानी थी। उन्होंने कुछ १५ उपन्यास लिखे। जिसमें आनंद मठ, देवी चौधरानी तथा सीताराम में उस समय की परिस्थिति का चित्र है। दुर्गेश नंदिनी, कपाल कुंडला, मृणालिनी, चन्द्रशेखर, राजसिंह बहुत ही लोकप्रिय हुए। विषवृक्ष, इंदिरा, युगलांगुरिया, राधारानी, रजनी और कृष्णकांत की वसीयत में समाज की अच्छाइयों व बुराइयों का चित्रण हुआ है। वे उन महान लोगों में से थे जिन्होंने भारतीयों

में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनके लेखन से राष्ट्रीयता का अर्थ लोग समझ सके। आनंद मठ राष्ट्रभक्ति पर लिखा शानदार उपन्यास है।

वर्ष १७७३ में बंगाल में पड़े भीषण अकाल के समय अंग्रेजी अत्याचार के विरुद्ध स्वराज्य के लिए जो आंदोलन हुआ। उसी की कहानी आनंद मठ में है। आनंद मठ देश के लिए जीने वाले और देश के लिए मरने वालों की कहानी है। सत्यानंद, भवानंद, महेन्द्र, जीवानंद, भाँति आदि का मातृभूमि से प्रेम अनुकरणीय है। महेन्द्र से भवानंद कहते हैं– **''हमारी तो बस एक ही माँ है और वह है मातृभूमि। न हमारी और कोई माँ है, न कोई पिता, न पत्नी, न बच्चे, न घरद्वार। यह सुजलां सुफलां धरती ही तो हमारी माँ है।''** आनंदमठ उपन्यास का गीत वन्देमातरम् १८७५ बंकिमचन्द्र की साहित्य लता पर खिला हुआ सर्वश्रेष्ठ पुष्प है। बंकिमचन्द्र की प्रतिभा का सम्पूर्ण सौन्दर्य सौरभ तथा सुधा की माधुरी इस काव्य में एकत्रित हुई है। यह गीत आगे चलकर देशभक्तों का कंठहार बन गया स्वाधीनता संग्राम का शस्त्र बन गया। बंकिमचन्द्र के जीवनकाल में ही इसका अन्य भाषाओं हिन्दी, अंग्रेजी, तेलगु, कन्नड़ में अनुवाद हुआ। १८८३ में इसकी लोकप्रियता का लाभ उठाते हुए नेशनल थिएटर के अध्यक्ष केदारनाथ चौधरी ने इसका नाट्य रूपान्तरण किया। १८९६ के काँग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम इसे गाया गया इसके बाद लगातार काँग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में इसका गायन होता रहा है। वहाँ राष्ट्रीयता का प्रखर बोध जगाता रहा। १९०५ के बंगाल विभाजन के समय वन्देमारतम् का नारा सर्वत्र गूँज उठा। इसी प्रकार १८६५ में दुर्गेशनंदिनी का प्रथम प्रकाशन हुआ और २८ वर्षों में इसके १३ संस्करण निकालने पड़े। बंकिमचन्द्र के उपन्यास मनोरंजन के साथ–साथ लोगों की विचार भक्ति को भी जाग्रत करते थे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी इनके ऐतिहासिक उपन्यासों से प्रभावित थे, उन्होंने नरेन्द्र (विवेकानन्द) को भी इनके पास भेजा था।

बंकिमचन्द्र ने उपन्यास लेखन के साथ–साथ अन्य उत्कृष्ट ग्रंथ भी लिखे जैसे– ''कृष्ण चरित, धर्मतत्व, देवतत्व, श्रीमद्भगवद्गीता पर विवेचन। अंग्रेजी और बांग्ला में उन्होंने हिन्दुत्व पर लेख लिखे, अंग्रेजी के ग्रंथों का भी उनका अध्ययन गहरा था। वे स्वयं एक सनातन हिन्दू परिवार के तत्व चिंतक थे। उनका लिखा कृष्णचरित उत्कृष्ट रचना है। बंकिमचन्द्र ने महाभारत, हरिवंश तथा अन्य पुराणों का गहराई से अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि कृष्ण ने जो जीवन दर्शन दिया है, उससे बढ़कर दर्शन कोई नहीं दे सकता। कृष्ण पवित्रता व न्याय की साकार मूर्ति थे। उन्होंने स्वयं के लिए कुछ अपेक्षा नहीं की। कृष्ण–सा त्यागी महापुरुष दूसरा हो ही नहीं सकता, इसलिए उनका जीवन अनुकरणीय है, वह हमें प्रेरणा देता रहेगा।

बंकिमचन्द्र पत्रकार भी रहे। १८७२ में बंग दर्शन पत्रिका प्रारंभ की। पत्रिका के पहले अंक में वे लिखते हैं– **''जब तक हम अपनी भावनाओं को अपने विचारों को मातृभाषा में व्यक्त नहीं करेंगे, तब तक हमारी उन्नति हो ही नहीं सकती।''** बंकिमचन्द्र लोगों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना चाहते थे। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी बंग दर्शन को आषाढ़ की प्रथम बौछार सा सुखद बताया। आषाढ़ की पहली बौछार से गर्मी से झुलसते पेड़–पौधों को नवजीवन मिलता है। बंग दर्शन ने जनता को प्रगति का नया रास्ता दिखाया, जनता उसके अंकों की प्रतीक्षा करती। उपन्यास, नाटक, काव्य, लेख–आलोचना के स्तंभ इसमें रहते। भावी पत्रिकाओं के लिए इसने मार्ग प्रशस्त किया।

बंकिमचन्द्र मातृभाषा के अनुरागी थे। उन्होंने अंग्रेजीयत के प्रति आकर्षित लोगों को लक्ष्य कर कहा– ''अपनी भाषा से ही लोग प्रगति कर सकते हैं। हमें किसी भाषा से घृणा नहीं करनी है हमें तो अपना ज्ञान संग्रह बढ़ाने के लिए प्रत्येक भाषा का प्रयोग करना

चाहिए पर यदि प्रगति करनी है तो एक ही मार्ग है अपनी भाषा का। बंकिमचन्द्र राष्ट्रभक्त थे। एक बार एक व्यक्ति कविता पठन के समय दरिद्र भारतीय का उपहास कर रहा था तो बंकिम से नहीं रहा गया। वे वहाँ से तुरन्त चले गए। रामकृष्ण परमहंस भी बंकिमचन्द्र की राष्ट्रभक्ति के प्रशंसक थे। एक बार रामकृष्ण ने उनसे पूछा– ''बंकिम! तुम किस कारण बंकिम (तिरछे) हो।'' बंकिमचन्द्र ने हँसते–हँसते उत्तर दिया– ''ब्रिटिशों की ठोकरों से।''

एक बार स्वामी विवेकानन्द ढाका गये, युवकों से बातचीत करते–करते एक युवक ने उनसे पूछा– ''हमें क्या पढ़ना चाहिए?'' तब स्वामी जी ने तुरन्त उत्तर– ''बंकिम का साहित्य।'' सचमुच बंकिमचन्द्र की लेखनी ने भारतवर्ष में चेतना जाग्रत की। उनके 'वंतेमारतम्' ने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया। बंकिमचन्द्र अपने माता–पिता को देव तुल्य मानते थे। उनके चरण स्पर्श किए बिना वे कोई भी काम आरंभ नहीं करते थे।

परन्तु वे लेखनकार्य को अधिक समय नहीं दे पाए उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, श्रीमद्भगवद्गीता के अध्ययन ने उनका स्वभाव पूर्णत: परिवर्तित हो गया। ८ अप्रैल १८९४ को उनका देहावसान हो गया। सचमुच वे ऋषि थे। जिन्होंने हमें नये भारत का सृजन करने के लिए वंदेमातरम् का संजीवन मंत्र दिया। बंकिमचन्द्र के इस संजीवन मंत्र को स्वर देते हुए हम भारत को परम वैभव के पथ पर ले जाए, यही बंकिमचन्द्र को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– देसुरी जि. पाली (राजस्थान)

बाल प्रस्तुति

चिन्टू का कुत्ता

– श्वेतांक कृष्ण

चिन्टू नाम का एक लड़का था। उसके पास टॉमी नाम का एक छोटा कुत्ता था। टॉमी अच्छा तो था लेकिन शैतान था। वह बच्चों को भौंक–भौंककर डराता रहता था। चिन्टू उसे बहुत समझाता लेकिन टॉमी उसकी बात नहीं मानता। एक दिन चिन्टू टॉमी के साथ खेल रहा था। तभी वहाँ एक बड़ा कुत्ता आया, चिन्टू टॉमी को खींचने लगा लेकिन टॉमी नहीं माना। वह उस बड़े कुत्ते से लड़ने लगा। लड़ते–लड़ते बड़े कुत्ते ने टॉमी को काट लिया, टॉमी बेहोश हो गया। चिन्टू चिल्लाया 'बचाओ–बचाओ' तभी चिन्टू के माता–पिता और पड़ोसी बाहर निकले सब तुरन्त टॉमी को अस्पताल ले गये।

डॉक्टर ने टॉमी को इंजेक्शन व दवा दी। सब टॉमी को लेकर घर आये। उपचार के बाद टॉमी कुछ दिनों में पूरी तरह से ठीक हो गया। उस बड़े कुत्ते के काटे जाने के बाद तो टॉमी अच्छा हो गया था, इसलिए सब कहते हैं बड़े कुत्ते ने टॉमी को सचमुच सुधार दिया। अब वह बच्चों को नहीं डराता, बल्कि उनके साथ खेलने लगा।

चिन्टू दूर गेंद फेंकता टॉमी दौड़कर गेंद ले आता। अब टॉमी बदल चुका था। उस चोट के बाद टॉमी को सबक मिल गया था कि किसी को परेशान नहीं करना चाहिए और अपने बड़ों से लड़ाई भी नहीं करनी चाहिए, नहीं तो उसका बुरा परिणाम होता है जैसा मेरे साथ हुआ।

– प्रयागराज (उ. प्र.)

कविता–२३ जुलाई आजाद जयंती

चन्द्रशेखर आजाद

– विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

धन्य चन्द्रशेखर आजाद।।
जब था निज भारत परतन्त्र।
तुमने चाहा बने स्वतन्त्र।।
तुम चल पड़े क्रान्ति के पथ पर,
लगा गूँजने केहरि–नाद।
धन्य चन्द्रशेखर आजाद।।
मातृभूमि से कर अनुराग।
दिया देश–हित सब कुछ त्याग।।
करते रहे सतत् संघर्ष,
लिया न सुख–सुविधा का स्वाद।
धन्य चन्द्रशेखर आजाद।।

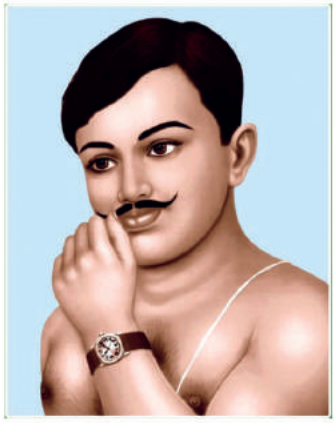

हे महान साहसी सपूत!
तुम बन गये मुक्ति के दूत।।
अडिग रहे अपने निर्णय पर,
हुआ न तुमको कभी विषाद।
धन्य चन्द्रशेखर आजाद।।
अमर तुम्हारा है बलिदान।
युग–युग तुम्हें मिलेगा मान।।
उत्सर्गों के लिए सर्वदा,
तुमको राष्ट्र रखेगा याद।
धन्य चन्द्रशेखर आजाद।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

(केहरिनाद= सिंह की दहाड़, उत्सर्ग = बलिदान)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *किशोरवय श्रीराम के बाण के प्रहार से एक राक्षस बहुत दूर जा कर गिरा, वह कौन था?*
- *अज्ञातवास के समय महाराज युधिष्ठिर ने अपना नाम क्या रखा?*
- *थाईलैण्ड का प्राचीन नाम क्या था?*
- *गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित पवित्र रैवतक पर्वत किस नाम से अधिक जाना जाता है?*
- *तमिल भाषा में राम–कथा लिखने वाले महाकवि कौन थे?*
- *लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व सम्पूर्ण भारत में कितने जनपद थे?*
- *किस प्राचीन ग्रंथ में आधुनिक दूरदर्शी यंत्र (टेलिस्कोप) बनाने की विधि बताई गई है, वह ग्रंथ कहाँ है?*
- *जर्मनी के स्टुटगार्ट में स्वतंत्र भारत का ध्वज फहराने वाली क्रांतिकारी महिला कौन थीं?*
- *भरतपुर के वे महाराज कौन थे जिनके भय से हमलावर अहमदशाह अब्दाली वापस लौट गया?*
- *सुभाष चन्द्र बसु के जन्मदिवस को किस दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

वन और हरियाली

– डॉ. के. रानी

सुबह का समय था। नंदिनी गाय वन में घास चरने के लिए गई हुई थी। वह जमीन के बजाए पेड़ों से उचक–उचक कर पत्ते तोड़कर खा रही थी। पेड़ पर बैठा कंपी कौआ उसे बड़े देर से देख रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि चारों ओर इतनी हरियाली फैली हुई है फिर भी नंदिनी पेड़ों से पत्ते तोड़कर क्यों खा रही है? उसे ऐसा करने में परेशानी भी हो रही थी फिर भी वह घास छोड़कर पेड़ के पत्ते ही खा रही थी। जैसे ही नंदिनी नीम के पेड़ के पास पहुँची कंपी बोला–

''कैसी हो नंदिनी?'' ''अच्छी हूँ।''

''क्या बात है? आजकल तुमने जिराफ की तरह पेड़ों से पत्तियाँ खानी शुरू कर दी है। क्या गर्दन लंबी करने का इरादा है?''

''वन में अब घास रही कहाँ गई है जो हम घास खाएँ?'' ''क्या बात कर रही हो? चारों ओर बरसात के शुरू होते ही इतनी हरियाली फैली हुई है और तुम कहती हो कि घास नहीं है।'' ''मैंने हरियाली से कब मना किया है? हरियाली और घास में अंतर होता है।'' ''तुम्हारी बात मैं समझा नहीं।''

''तुम ठीक कह रहे हो। हमारा वन आजकल बहुत हरा–भरा हो गया है। किन्तु इसके साथ ही यहाँ से घास और अन्य छोटी वनस्पतियाँ गायब होती जा रही है।'' ''यह क्या कह रही हो तुम?''

''मैं ठीक कह रही हूँ। तुम पेड़ पर रहने वाले और आकाश में उड़ने वाले पक्षी हो। वास्तव में तुम जमीन की यथार्थ स्थिति से अनजान हो। तुम केवल हरियाली देख रहे हो। यह नहीं देखते हरियाली कौन फैला रहा है?'' ''कौन है वह? तुम ही बता दो।''

''गाजर घास वन में खूब हरियाली फैला रही है। यह हमारे खाने के काम नहीं आती।''

''तो फिर किस काम आती है?''

''देख तो रहे हो। इसके कारण तुम्हें वन हरा–भरा लग रहा है। तुम सोच भी नहीं सकते कि इसके यहाँ पनपने से हमारे अपने वन की कितनी सारी वनस्पतियों की प्रजातियाँ नष्ट होती चली जा रही है।'' ''तुम सच कह रही हो नंदिनी?'' कंपी ने पूछा।

''यह बात सच हैं। तुम सबने तो इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया कि वन में क्या हो रहा है? धीरे–धीरे यह वनस्पति वन में फैल जाएगी। तब यहाँ की सारी छोटी वनस्पतियाँ और घास की प्रजातियाँ समाप्त हो जाएँगी।'' ''यह तो बड़े खतरे की बात है।''

''खतरा तो शुरू हो गया है। तुम देख ही रहे हो इस क्षेत्र में हमारे खाने के लिए घास नहीं है। मैं तो किसी प्रकार से उचक–उचककर झाड़ियों और पेड़ की पत्तियाँ खा रही हूँ। पता नहीं हिरण, सांभर, काकड़, खरगोश और न जाने अन्य छोटे शाकाहारी जीव अपने खाने की व्यवस्था कैसे कर रहे होंगे?

उन्हें तो भोजन ढूँढने यहाँ से बहुत दूर जाना पड़ता होगा।'' ''नंदिनी तुमने मेरी आँखें खोल दी। मैं अभी इस बारे में औरों से बात करता हूँ।''

''मेरा बेटा घर पर अकेला है कंपी! मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। तुम चाहो तो अपने साथियों से इस बारे में बात कर सकते हैं।'' ''ठीक है मैं उनसे बात करता हूँ।'' कहकर कंपी कौआ वहाँ से उड़ गया। वह सीधे पीकू तोते के पास पहुँचा। उसने नंदिनी की बात उसे बताई। उसे सुनकर वह परेशान हो गया। ''नंदिनी सही कहती है। हम सब तो खुश हो रहे थे कि हमारा वन कितना हरा-भरा हो गया है। जिधर देखो उधर हरियाली है। हमने तो इस ओर ध्यान नहीं दिया कि वन में हरियाली किसके कारण फैल रही है?''

''अब क्या होगा पीकू? अगर ऐसे ही यह घास पनपती रही तो कुछ दिनों बाद वन में गाजर घास के अलावा कुछ दिखाई नहीं देखा।'' कंपी बोला।

''यह सब तो पहले सोचना चाहिए था जब इसकी यहाँ फैलने की शुरुआत हुई थी।''

''आज मैंने नंदिनी गाय से यूँ ही पूछ लिया कि तुम पेड़ से पत्ते क्यों खा रही हो? तो उसने अपनी परेशानी मुझे बता दी। मुझे तो तब से अपने वन की बड़ी चिंता हो रही है।'' कंपी बोला।

''हम इसके लिए क्या कर सकते हैं?''

''हम इस वन में अकेले नहीं रहते हैं। हमारे साथ हमारे बहुत से शाकाहारी वनवासी साथी रहते हैं। कल यहाँ खाने के लिए जब कुछ नहीं मिलेगा तो वे सब यहाँ से पलायन कर जाएँगे। तब हमारे वन का क्या होगा? तुम कोई उपाय सोचो पीकू! हम अपने वन को इससे कैसे बचा सकते हैं?''

''यह घास तो बहुत तेजी से फैल रही है। इसे हटाना हम जैसे छोटे जीवों के बस का नहीं है। इसके लिए हमें बड़े प्राणियों की सहायता लेनी होगी।''

''नंदिनी बता रही थी इस गाजर घास के फूल भी हमारे लिए बहुत खतरनाक होते हैं। इससे सांस संबंधी कई बीमारियाँ हो जाती हैं।'' कंपी बोला।

''चलो, हम गज्जू हाथी के दल से इसके बारे में बात करते हैं। शायद वे कुछ मदद कर दे। पीकू तोता बोला। वह अपने कुछ साथियों के साथ उड़कर सीधे गज्जू हाथी के पास पहुँच गए। उस समय गज्जू अपने दल के सदस्यों के साथ नदी किनारे नहाकर आराम कर रहा था। ''राम, राम दादा!'' पीकू बोला।

''आज इधर का रास्ता कैसे भूल गए पीकू?''

''दादा! हम बहुत चिंतित हैं। हमारे वन पर बहुत बड़ा संकट आने वाला है।'' ''ऐसा क्या हो गया है? मुझे तो कहीं कोई संकट दिखाई नहीं दे रहा।''

''यही तो परेशानी की बात है दादा! आप जैसे समझदार प्राणियों को भी यह संकट दिखाई नहीं दिया।'' ''जो कुछ कहना है साफ-साफ कहो पीकू।'' ऐसा क्या हो गया है?''

''दादा! आजकल हमारा वन कितना हरा-

भरा हो रखा है।'' ''यह कोई नई बात थोड़ी है। प्रतिवर्ष ऐसा होता है। हमारे वन में कभी हरियाली की कोई कमी नहीं रही।'' ''मानता हूँ दादा! यह हरियाली हमारी अपनी वनस्पतियों के कारण नहीं है। इस बार यहाँ बाहरी वनस्पति ने अपना राज कर लिया है।'' ''यह क्या कह रहे हो तुम?''

''दादा! मैं सही कह रहा हूँ। आपने शायद ध्यान नहीं दिया। आप तो पेड़ों से पत्ते खाते हैं। उनके बारे में सोचिए जो भूमि की घास खाते हैं। वे सब इस अतिक्रमणकारी गाजर घास के शिकार है। वन की घास समाप्त होती जा रही है और इस बाहरी घास का हमारे वन पर अधिकार होता जा रहा है। दादा! आप ही कुछ कर सकते हो।''

''तुम बताओ मैं क्या कर सकता हूँ?''

''दादा! आप अपने साथियों के साथ मिलकर इस घास को उखाड़ सकते हो। अभी इस पर फूल नहीं आए हैं। फूल आ जाएँगे तो देर हो जाएगी।''

''तुम ठीक कहते हो पीकू! यह वन हमारा है। हम तो शाकाहारी जीव हैं। हमें इस पर ध्यान देना चाहिए था जब इसकी शुरुआत हुई थी। तभी इसे समाप्त कर देना चाहिए था।''

''दादा! जब जागे सभी सवेरा है। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। हम चाहे तो इसे आगे फैलने से रोक सकते हैं और धीरे-धीरे इसे समाप्त कर सकते हैं।'' ''ठीक है। मैं अपने साथियों के साथ बात करता हूँ।'' ''दादा! हम भी आपके साथ चलते हैं।'' इतना कहकर पीकू व कंपी अपने साथियों के साथ उधर चल पड़े जिधर गज्जू दादा के दल के सदस्य विश्राम कर रहे थे। दादा ने एक आवाज देकर सबको बुला लिया। पीकू, कंपी और उनके साथी पेड़ पर बैठे थे। दादा अपने दल के साथ नीचे नदी किनारे बात कर रहे थे। दादा ने अपने साथियों को समझाया-

''हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई। हमने ध्यान नहीं दिया हमारे वन में क्या कुछ हो रहा है?''

''जंगल में तो कुछ न कुछ होता ही रहता है गज्जू!'' चीची हाथी बोला। ''ऐसी बात नहीं है। वन में तरह-तरह की वनस्पतियाँ होती हैं किन्तु इस बार एक वनस्पति वन में इतनी तेजी से फैल रही है कि उसने अन्य वनस्पतियों का जीना दूभर कर दिया है और उनकी प्रजाति को लुप्त होने की कगार पर डाल दिया है।'' ''तुम कौन सी वनस्पति की बात कर रहे हो?'' ''तुम देख तो रहे हो। चारों ओर गाजर घास कितनी तेजी से बढ़ रही है। इसके कारण वन की वनस्पतियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।''

''हम क्या कर सकते हैं? वन में और भी तो प्राणी रहते हैं।'' ''उन्हें भी इसकी चिंता है लेकिन वे हमारे बराबर शक्तिशाली नहीं हैं। वे इस घास का नष्ट नहीं कर सकते।'' ''इसका अर्थ है यह कार्य हमें ही करना होगा।'' चीची ने पूछा।

''हाँ, जितनी शीघ्रता से हो सके यह घास यहाँ से उखाड़ फेंकना है। इस काम में बंदर, लंगूर और भालू भी मदद कर सकते हैं।''

''तुम ठीक कहते हो दादा! हम अभी लंगूर और बंदरों के दल से भी बात करते हैं।'' पीकू बोला और अपने साथियों को लेकर वहाँ से उड़कर वह सीधे पहले नीटू बंदर के दल और उसके बाद पंपी लंगूर के दल के पास पहुँचा। पीकू और कंपी ने उन्हें भी वन की समस्या बताई। वे सभी उनकी बात से सहमत थे। सबने मिलकर निर्णय लिया कि वे आज से ही यह काम शुरू कर देंगे। दोपहर होते-होते गज्जू हाथी, नीटू बंदर व पंपी लंगूर के दल इस काम के लिए एकत्र हो गए। उनसे साथ बीरू और टिंकू भालू के परिवार भी शामिल हो गए।

पहले ही दिन उन्होंने वन के एक बड़े से भाग से गाजर घास हटा दी। दूसरे दिन से उन्होंने समय निश्चित कर दिया और धीरे-धीरे वन से इस घास का सफाया करने में लग गए। उन सब की मेहनत रंग लाई। उन्होंने इस घास को उखाड़ कर कई जगह पर

ढ़ेर लगा दिए। नंदिनी गाय, चमकू हिरण, चीनू खरगोश आदि यह सब देखकर बहुत प्रसन्न थे।

कंपी बोला– ''गज्जू दादा! नीटू और पंपी! आप सबके दलों के साथियों ने समूचे वन पर बहुत बड़ा उपकार किया है।'' ''इसमें उपकार की क्या बात है? यह तो हम सबकी लापरवाही का परिणाम था जो हमारा ध्यान पहले इस ओर नहीं गया और वन में एक बाहरी घास अपना अधिकार जमाती चली जा रही थी।'' गज्जू बोला। ''तुमने तो हमें सचेत करके बहुत अच्छा काम किया है पीकू!''

''दादा! यह काम तो नंदिनी गाय ने किया फिर कंपी कौवे ने मुझे बताया। तभी हमें पता चला कि हमारे वन पर बाहरी वनस्पति का अधिकार होता जा रहा है और हमारे वन के घास की अपनी प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में है।''

''तुम सब चिंता मत करो। धीरे–धीरे हम इस घास को यहाँ से उखाड़कर समाप्त कर देंगे।''

''आपका सबका धन्यवाद! आप, इसे उखाड़ने का काम कर दीजिए। बाकी ठिकाने लगाने का कार्य हम सब छोटे जीव मिल–जुलकर कर देंगे।''

महीने भर में उन्होंने गाजर घास का अंत कर दिया। अब कहीं पर कोई छोटा–मोटा पौधा दिख जाता तो शाकाहारी जीव घास चरते हुए उसे उखाड़ कर किनारे कर देते।

सब प्रसन्न थे कि समय रहते उन्होंने इस खरपतवार को अपने वन से हटा दिया था। वन के छोटे शाकाहारी जीव गज्जू दादा, नीटू बंदर, पंपी लंगूर, बीरू भालू के परिवार व सभी का धन्यवाद कर रहे थे जिनके कारण वन से इतना बड़ा संकट समय रहते टल गया था। वन में फिर से घास की प्रजातियाँ पहले की तरह पनपने लगी। सभी शाकाहारी जीवों को फिर से अपने वन में नर्म घास खाने को मिलने लगी थी।

– चुक्खूवाला (उत्तराखण्ड)

संस्कृति प्रश्नोत्तरी के सही हल

१) मारीच
२) कंक
३) स्याम
४) गिरनार
५) महाकवि कम्ब
६) सोलह
७) शिल्प संहिता, अन्हिलपुर का जैन ग्रंथालय (गुजरात)
८) मैडम कामा
९) महाराजा सूरजमल
१०) पराक्रम दिवस

उलझ गए!

राजू मोहन से कहता है-'अगर तुम मुझे एक टॉफी दे दो तो मेरे पास तुमसे दुगनी टॉफियां हो जाएंगी।' तो मोहन राजू से कहता है-'अगर तुम मुझे एक टॉफी दो तो हम दोनों के पास बराबर टॉफियां हो जाएंगी।' किसके पास कितनी टॉफियां हैं?

उत्तर: राजू के पास सात और मोहन के पास पांच टॉफियां हैं।

हमारे लोकवाद्य

– ललितनारायण उपाध्याय

हमारे देश के लोकजीवन में लोकवाद्यों का बहुत अधिक महत्व है। वाद्य अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ वाद्य सरल और सस्ते होते हैं, तो कुछ वाद्य शास्त्रीय वाद्य होते हैं अर्थात् इनकी बनावट सरल नहीं होती तथा ये सस्ते और सहज सुलभ नहीं होते।

भारतीय लोकवाद्यों में एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे सरल, सस्ते और सहज सुलभ हैं। हमारे लोकवाद्यों में से कुछ बहु–प्रचलित लोकवाद्यों का यहाँ हम अपने पाठकों से परिचय करा रहे हैं।

घण्टा– यह पीतल और जस्ते का या तांबे पीतल आदि मिश्रित धातुओं का बना होता है। इसके बीच में एक घण्टा या लोलक लटकता रहता है जिसकी सहायता से हम इसे बजाते हैं। घण्टा या घण्टी प्रत्येक मंदिर के प्रवेश द्वार पर बना या लगा होता है। प्रवेश करते ही हम इसे बजाकर अपनी आराधना करते हैं।

आरती के समय घण्टा बजाकर लय ताल को जारी तथा क्रमबद्ध रखा जाता है। बड़े–बड़े मंदिरों में जब घण्टानाद होती है तो हमारा मन श्रद्धा और भक्ति से भर जाता है।

मंजीरे– मंजीरे दो छोटी गोल–गोल थालीनुमा आकार के बने होते हैं। इसमें पीतल ताँबे या जस्ता को उपयोग में लाया जाता है। ये मिश्रित धातुओं का भी होता है। जिससे इनकी ध्वनि सुमधुर हो जाती है। बीच में एक–एक छेद बनाकर इन्हें लकड़ी के गट्टों से पकड़ने योग्य बना दिया जाता है। इनकी सहायता से इन्हें सजाया जाता है। भजन–कीर्तन–नर्तन–स्वांग आदि के समय मंजीरे बजाए जाते हैं।

करताल– ये चतुर्भुज आकार के लकड़ी के दो–दो टुकड़े होते हैं। जिनके बीच में झनकार या आवाज के लिए लटकन लगे होते हैं। इन दोनों को आपस में टकराकर भजन कीर्तन में मधुर ध्वनि उत्पन्न की जाती है तथा लय और ताल क्रमबद्ध किए जाते हैं।

महाराष्ट्र में यह विशेष प्रकार की **''चिम्पड़ी''** कहलाती है।

मरचंग– यह लोहे की बनी होती है, जिसके अंदर हिलती हुई लोहे की ही जीभ सी लगी होती हैं, जिसके कारण यह बजती है। इसे बजाने के लिए थोड़ा बहुत अभ्यास या प्रयास करना होता है। इसके पश्चात् इसे आसानी से बजाया जा सकता है।

यह लोकवाद्य राजस्थान तथा दक्षिण भारत से बहुत बड़े क्षेत्र में लोकप्रिय है।

घुंघरू– घुंघरू पीतल की बनी हुई गोल छोटी–छोटी घण्टियाँ होती हैं। इसके अंदर घुंघरू चमड़े में विशेष प्रकार मढ़ाए या सजाए जाते हैं। साधारणत: घुंघरू रस्सी सुतली की सहायता से उसमें पिरोकर पैरों में इस प्रकार बाँधे जाते हैं कि ये ठीक से बंध भी जावें तथा पैरों को कोई नुकसान न पहुँचाएँ।

चिमटा– दिखने में चिमटा कोई वाद्य सा नहीं दिखाई देता, परन्तु जब इसे लय और ताल मिलाकर

बजाया जाता है तो सुनकर आनंद आ जाता है। आपने अनेक साधुओं को चिमटा बजाकर गाते और फैरी करते देखा होगा। आज भी सुबह जब कोई जोगी चिमटा बजाकर गाते हुए निकलता है तो हमारा मन भाव–विभोर हो जाता है।

उसके गान को सुनकर हमारा मन नाचने लगता है या ईश्वर की भक्ति में रम जाता है।

चिमटे में केवल दो फल होते हैं। चिमटा इस गोल कड़े सहायता से भी बजाया जाता है। एक रोचक तथ्य यह हैं कि– चिमटा संकट के समय साधु की रक्षा का हथियार भी बन जाता है। चिमटे की आवाज से दृष्टि बाधित साधु मार्ग में आने वालों को सचेत भी करते चलते हैं और समय–असमय अपनी रक्षा भी करते हैं। इस प्रकार यह वाद्य भी है और हथियार भी है।

मादल– मादल वनवासियों का प्रधान लोक वाद्य है। जंगल में जब मादल गूंज उठता है तो वनवासियों का मन झुम उठता है। पथिक मादल की आवाज सुनकर मंत्र–मुग्ध हो जाता है।

मादल लकड़ी का बना होता है। इसका आकार ढोलक सा होकर भी उससे थोड़ा भिन्न होता है। इस पर उपयुक्त जानवर का चमड़ा मढ़ा जाता है। इसके दो मुख होते हैं जिन पर जव का आटा लगाया जाता है।

चंग– लकड़ी के विशेष प्रकार के घेरे पर भेड़ के चमड़े से चंग बनाया जाता है। इसे कंधे या जांघों आदि पर सावधानी से रखकर इसे दो हाथों की अंगुलियों की सहायता से बजाया जाता है। इसे पतली लकड़ियों के सहारे भी सावधानी से बजाया जाता है, ताकि ध्वनि हो तथा चंग टूटे नहीं। इसे होली तथा तीज त्यौहारों के अवसरों पर भी बजाया जाता है। नृत्य करते तथा गीत–गाते समय भी इसका उपयोग किया जाता है। उच्चस्तर पर जब इस पर कोई ओजस्वी गीत गाया जाता है तब वीरों में वीर रस का संचार हो उठता है। राजस्थान के अलावा भी देशभर में यह लोक वाद्य सर्वत्र लोकप्रिय है।

ढोलक अथवा ढोलकी– ढोलक अथवा ढोलकी भारतीयों का आम लोक वाद्य है। यह हमारे घरों में आसानी से मिल जाता है। इस वाद्य को घर में रखना शुभ माना जाता है। जरा खुशी का अवसर आया कि ढोलक निकाली और नाचना–गाना प्रारम्भ हुआ। बच्चे का जन्म हुआ हो या उसका जन्मदिन हो, माता का पूजन हो या जलवायु पूजन हो रहा हो, ढोलक की ध्वनि सुनते ही पास–पड़ोस की बहनें इकट्ठी हो जाती हैं और बिना बुलावे के भी महिलाओं का 'स्नेह सम्मेलन' जुट जाता है। मानो ढोलक की आवाज ही स्नेह बुलावा हो।

ढोलक और ढोल की बनावट एक सी होती है। छोटे आकार–प्रकार वाला यह यंत्र ढोलक कहलाता है तो बड़े आकार वाला ढोल। बड़े–बड़े ढोल जिनका चयन राजस्थान आदि में हैं, लोहे के ऊपर चढ़े ऊँट चर्म से बनाये जाते हैं जबकि छोटी–छोटी ढोलकें बकरी के चमड़े से मढ़ी जाती हैं।

अधिक लोगों के द्वारा जब नृत्य किया तथा गाया जाता है तब ढोल का उपयोग होता है। अलग–अलग क्षेत्रों में बजाए जाने वाले और भी अनेक परम्परागत लोकवाद्य हैं।

– खण्डवा (म. प्र.)

गिजाई

– डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

अरे! गिजाई, अरी! गिजाई,
बोल कहाँ से आई तू?
अभी तलक तो नहीं यहाँ थी,
इतने दिन तू रही कहाँ थी?
पिछली बारिश में देखा था,
बतला दे तू गयी जहाँ थी?
क्यों इस बार झमाझम वाली,
बारिश साथ न लाई तू?
तुझे देख होती हैरानी,
तू लगती पक्की सैलानी।
जब कागज पर तुझे चढ़ाऊँ,
तो करती है आनाकानी।
तनिक छुआ तो हुआ तुझे क्या,
क्यों ऐसे घबड़ाई तू?
घूम रही है झुंड बनाए,
छी! छी! केवल मिट्टी खाए।
मैगी नूडल खाएगी क्या?
मेरी माँ ने आज बनाए।
क्यों किसान की ताई है तू?
क्यों उसके मन भाई तू?

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

बीर बहूटी

– पुखराज सोलंकी

लाल रंग की कोमल–कोमल
छोटी–छोटी बीर बहूटी।
चलती है तो ऐसा लगता
लुढ़क रही मखमल की गोटी।।
बारिश के मौसम में आती
बाकी दिन रहती कहाँ?
कौन से ब्यूटी पार्लर जाती
बतला दो सजती कहाँ?
रूप मखमली लगता ऐसा
धरती की बिन्दी के जैसा।
कौन देश से आयी हो तुम
लगा है कितना दमड़ी पैसा?
रानी कीड़ा तुझे ही कहते
कोई पुकारे इन्द्रवधू।
और बहुत से नाम तुम्हारे
रक्तवर्ण और वर्षाभू।।
कुछ जीवों से हम डरते हैं
लेकिन तुम लगती अनूठी।
लाल रंग की मखमली–सी
छोटी–छोटी बीर बहूटी।।

– बीकानेर (राजस्थान)

उत्सव न बने पर्यावरण प्रदूषण का कारण

– शिखरचंद जैन

बच्चो! अगर आप अपने जन्मदिन की पार्टी में बहुत सारे गुब्बारे सजाने और अपने अतिथि मित्रों पर चमकीली पन्नियों की बौछार करने की जिद्द करते हैं, तो एक बार यह लेख अवश्य पढ़ें–

कई बार हम अनजाने में ही पर्यावरण प्रकृति और वन्यजीवों को नुकसान पहुँचाते रहते हैं। हमारी खुशी पृथ्वी और प्राणियों के लिए दु:ख का कारण बन सकती है हमारा उत्सव प्रदूषण का कारण बन सकता है। आपने यह तो सुना होगा कि पटाखों से ध्वनि और वायु प्रदूषण फैलता है इसलिए पटाखे नहीं चलाने चाहिए लेकिन क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि जन्मदिन, नववर्ष सालगिरह की पार्टी हो, स्कूल, कॉलेज का वार्षिकोत्सव हो, शादी–विवाह का अवसर हो या स्टेज शो हो, हम स्टेज, पार्टी हॉल या घर को रंग–बिरंगे गुब्बारों से सजाते हैं और ग्लिटर व कन्फेट्टी (चमकने वाली प्लास्टिक की कतरन, थर्माकोल की रंगीन गोलियाँ) आदि की मेहमानों पर बौछार करते हैं। यह गुब्बारे और ग्लिटर आदि पर्यावरण व प्राणियों के लिए नुकसानदायक हैं। आइए जानते हैं कैसे–

गुब्बारे– गुब्बारे दो चीजों से बनते हैं– लैटेक्स और मायलर। वैसे तो लैटेक्स के गुब्बारों को बायोडिग्रेडेबल बताया जाता है लेकिन इन्हें भी डीकंपोज होने में ६ माह से ४ वर्ष तक का समय लग जाता है। मायलर गुब्बारे सिंथेटिक नायलॉन से बनते हैं। जिन पर मेटालिक कोटिंग होती है। यह बायोडिग्रेडेबल नहीं है।

किसी विशेष पर जब गुब्बारे हवा में उड़ाए जाते हैं तो ये कई बार हजारों मील दूर जाकर निर्जन, एकांत और स्वच्छ स्थानों पर भी पहुँच जाते हैं और प्रदूषण फैलाते हैं। ये समुद्र में या जमीन पर गिरते हैं तो नासमझ पशु–पक्षी अथवा जलीय जंतु इन्हें खाद्य वस्तु समझकर खा लेते हैं। इससे उनका पाचन तंत्र अवरुद्ध हो जाता है। पोषण की कमी हो जाती है। भूख बंद हो जाती है या आँतों में इंजरी हो जाती है। परिणाम प्राणियों की मृत्यु हो जाती है। इन गुब्बारों के साथ बंधी रस्सी या रिबन जानवरों का आहार बन जाता है या गले में उलझकर उनकी मृत्यु का कारण बन जाता है।

ग्लिटर और कनफेटी– शुभ अवसरों पर मेहमानों पर किसी आकर्षक, उपयोगी, खुशबूदार वस्तु या गुलाब जल अथवा फूलों की पंखुड़ी आदि बरसाने करने की पुरानी परंपरा रही है। किसी जमाने में हमारे देश में और विदेशों में भी अनाज के दाने, चावल (अक्षत), टॉफियाँ, फूलों की पंखुड़ी आदि बरसाकर उनका स्वागत करते थे। विवाह के अवसर पर या त्यौहार पर भी ऐसा होता था। लेकिन आधुनिक युग में बरात, जन्मदिन की पार्टी में आए मेहमानों, दूल्हा–दुल्हन, किसी प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों पर चमकी व रंग–बिरंगी कागज की कतरनें विभिन्न माध्यमों से बरसाई जाती है। ऐसे हम जाने–अनजाने में माइक्रो प्लास्टिक का प्रदूषण फैला देते हैं। ये कनफेट्टी या ग्लिटर पीवीसी (पॉलीविनाइल क्लोराइड) और पेट (पॉलिथिलीन टेरेफैटेलेट) से बनते हैं माइक्रोप्लास्टिक ५ मिमि से कम परिधि के प्लास्टिक के टुकड़े होते हैं जो आज की तारीख में पर्यावरण विशेषज्ञों के लिए चिंता का विषय बन चुके हैं। ग्लिटर १ मिलीमीटर से कम परिधि के चमकीले टुकड़े हैं। ये वातावरण में फैलकर समुद्र में गिरते हैं इनसे मछली, शेलफिश, सी बर्ड एवं अन्य जलीय जंतु मृत्यु के द्वार पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार पेट, जिससे ग्लिटर बनती है उससे केमिकल निकलकर मानव और जंतुओं के हारमोंस पर बुरा असर डालते हैं और उनकी अस्वस्थता या मृत्यु का कारण बन सकते हैं।

अच्छा होगा– मेहमानों के स्वागत के लिए उन्हें फूल, पौधे आदि दिए जाएँ या गुलाबजल अथवा इत्र की बौछार की जाए तो अधिक अच्छा होगा। शुभ अवसरों पर दीप जलाने, अतिथियों को तिलक लगाने और उन्हें मिठाई खिलाने में भी बड़ा आनंद आएगा। तेज शोरगुल से बचते हुए मेहमानों को कुछ गाने, गीत, कविताएँ या चुटकुले आदि सुनाने का अवसर दें व आप भी कुछ सुनाएँ तो अवसर को हमेशा के लिए अविस्मरणीय बनाया जा सकता है।

– कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

पुस्तक परिचय

बालवाटिका के संपादक वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. भेरूँलाल गर्ग की दिल्ली पुस्तक सदन दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ द्वारा प्रकाशित दो महत्वपूर्ण कृतियाँ-

मेरी माटी मेरा देश
मूल्य ३९५/-
पेपर बेक मूल्य १९५/-

राजस्थान के एक छोटे से गाँव सोडार में जन्मे श्री गर्ग ने अपने बाल्यकाल से इस परिपक्व वय तक के विभिन्न अनुभवों को सरस एवं रोचक संस्मरणों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। संस्मरण विधा की यह एक उत्तम कृति है।

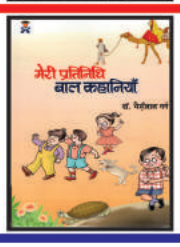

मेरी प्रतिनिधि बाल कहानियाँ
मूल्य ४५०/-

डॉ. गर्ग श्रेष्ठ संपादक के साथ कुशल रचनाकार भी हैं इस बाल कहानी संग्रह में उनकी ३५ कहानियाँ हैं जो न केवल मनोरंजन बल्कि संस्कार-पोषण भी करती है। सकारात्मक संप्रेषण की श्रेष्ठ कृति है यह संग्रह।

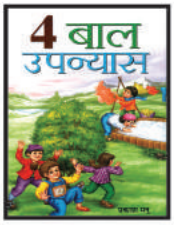

प्रसिद्ध बाल साहित्य सर्जक एवं बाल साहित्य इतिहासकार डॉ. प्रकाश मनु की दो पुस्तकों में सात बाल उपन्यास-

४ बाल उपन्यास
मूल्य ३५०/-
प्रकाशक- एस. के. इन्टरप्राइजेस, सी-५४, गणेशनगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-११००९२

एक रोचक एवं सुदीर्घ कथाक्रम जिसमें अनेक पात्र अनेक घटनाओं के साथ अपना-अपना प्रभाव उत्पन्न कर पाठकों को बाँधे रखते हैं उपन्यास ही वह विधा है। डॉ. प्रकाश मनु ने इस पुस्तक में अपने चार बाल उपन्यास चिंकू मिंकू और दो दोस्त गधे, भोलू पढ़ता नई किताब, सांताक्लाज का पिटारा और गोलू भागा घर से प्रस्तुत किए हैं जिनमें रोचकता तो है ही साथ ही भावनात्मक ढंग भी है।

किस्सा चमचमपरी और गुड़ियाघर का
मूल्य ३५०/-
प्रकाशक- चिल्ड्रन बुक टेम्पल, सी-५५, गणेशनगर, पांडव नगर, दिल्ली-११००१२

किस्सा चमचमपरी और गुड़ियाघर का, फागुन गाँव का बुधना और निम्मा परी, सब्जियों का मेला इन तीन बाल उपन्यासों को इस पुस्तक में संजोया गया है। आपको एक नए भाव जगत में विशेष अनुभूति से भरते हैं ये उपन्यास।

भय का भूत
मूल्य ६०/-
प्रकाशक- अवधी प्रकाशन रानेपुर पलिया गोलपुर, सुलतानपुर-२२८१३१ (उ. प्र.)

इस बाल कथा संग्रह के जिसमें वे बारह बाल कहानियाँ हैं जो श्री दिनेश प्रतापसिंह 'चित्रेश' द्वारा आपको लीक से हटकर कुछ नई भावभूमि पर यथार्थ से गढ़ी कहानियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। उनकी विशेष शैली और सधी हुई भाषा आपको इन कहानियों से गहरे जोड़ने की क्षमता रखती है।

बाल साहित्य के आँगन को जगमगाने वाले अनेक प्रदीप बुझे

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

श्री नरेन्द्र कोहली

श्री शंभूलाल शर्मा बसंत

अत्यंत शोकजनक है कि विगत दिनों बाल साहित्यकार एवं बाल साहित्य को प्रोत्साहित करते रहने वाले कई स्वनामधन्य साहित्यसाधक हमारे बीच नहीं रहे। संभवत: कोई वर्ष ऐसे रहे हों जब एक साथ इतने बालसाहित्यकारों को हमें अंतिम नमन करने का प्रसंग आया हो। ये सभी हिन्दी जगत के पूर्ण प्रकाशित दीप थे। अनेक तो कोरोना की काली आँधी से अनायास ही बुझ गए। निश्चित रूप से कुछ नाम अब भी इस सूची में नहीं होंगे पर जिनकी सूचनाएँ इधर–उधर से मिली है वे हैं– सर्वश्री अहदप्रकाश, प्रो. सुरेश गौतम, जहीर कुरैशी, जगदीश गुप्त, दुर्गाप्रसाद शुक्ल 'आजाद', कमलेश द्विवेदी, श्रीमती विभा देवसरे, शंभूलाल शर्मा 'बसंत', नरेन्द्र कोहली, बृजनंदन वर्मा, डॉ. कुँवर बैचेन, परमात्माप्रसाद श्रीवास्तव, प्रो. सुरेन्द्र यादव, प्रो. राजाराम,अरविन्द कुमार, प्रेमचन्द्र गुप्त 'विशाल', सुधा जौहरी, शिवशंकर शुक्ल, राजेश झरपुरे, एवं राजेश गुप्ता। प्रभु से विनंती है यह और न बढ़े।

सभी दिवंगत आत्माओं को **देवपुत्र परिवार** सादर श्रद्धासुमन अर्पित करता है। इनसबने कहीं न कहीं, अपनी रचनात्मकता से हिन्दी बाल–जगत को आलोकित रखा है अत: सभी सादर चिरस्मरणीय रहेंगे।

शोक समाचार

कोरोना की इस दूसरी लहर ने हमसे हमारे कई स्वजनों को छीनकर अपूरणीय क्षति पहुँचाई है। **देवपुत्र** परिवार से भी हमने अपने निकट सहयोगियों को खोया है। देवपुत्र के मराठी संस्करण के सब प्रकार से चिंता करने वाले देवपुत्र हिन्दी की चालीस वर्षों की यात्रा के लेखकीय सहयोगी **श्री रामचन्द्र जी शौचे** उपाख्य **रामभाऊ जी** दिवंगत हो गए। दु:ख को और भी दारूण बनाने की बात यह कि उनके देवलोक गमन के दूसरे ही दिन उनके बड़े पुत्र **श्री संजय शौचे** जी भी हमारे बीच नहीं रहे।

दूसरा वज्रपात यह कि देवपुत्र की वर्षों से संगणक पर साज–सज्जा करते हुए समस्त प्रकार के कार्यों में अत्यन्त निष्ठा से जुटे रहने वाले युवा सहयोगी **श्री महेश सिसोदिया** को भी कोरोना ने क्रूरता से हमसे छीन लिया।

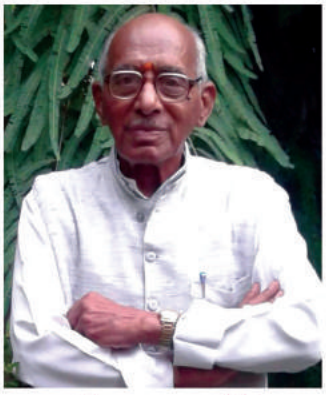

श्री रामचन्द्र शौचे

अत्यन्त दुखद यह कि उनके निधन के एक सप्ताह पूर्व ही उनकी पत्नी **प्रो. श्रीमती सोनाली सिसोदिया** जो कि अपने भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान की ही शोधार्थी रही है वे भी कोरोना से दिवंगत हुई। अपने इन बहुत अपनों की छबियाँ आँखों के सामने से ओझल नहीं होती। मन बहुत भारी है पर ईश्वरकी इच्छा के समक्ष सब विवश हैं। सभी को सादर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि– **देवपुत्र परिवार।**

श्रीमती सोनाली, महेश सिसोदिया

जल है तो कल है

– मोनिका जैन 'पंछी'

रानी छुट्टियों में दादा-दादी के यहाँ आई हुई थी। सुबह जब वह दातून कर रही थी तो उसने पूरा नल खुला छोड़ रखा था। जिससे बहुत तेज पानी बह रहा था। दादा ने आकर उसका नल बंद किया और दातून और मुँह स्वच्छ करते समय ही नल खोलने को कहा। दातून करके रानी दादा के साथ सैर पर निकल गई। उसने दादा से पूछा– ''दादा! यहाँ पानी कम आता है क्या? हमारे घर में तो बहुत पानी आता है इसलिए मेरी वैसी ही आदत है। पर यहाँ मैं ध्यान रखूँगी। भूल जाऊँ तो आप स्मरण करा देना।''

रास्ते में दादा ने रानी से कहा– ''बच्ची! हमारे यहाँ प्रतिदिन हर घर में बहुत पानी आता है। किन्तु फिर भी पड़ोस में रहने वाली अंजलि कभी ग्लास में पानी झूठा नहीं छोड़ती। जितना पीना होता है उतना ही लेती है। रजनी मौसी जो शाम को घर आयी थीं, वे कपड़े धोने के बाद अंत में बचे साफ पानी को संडास में उपयोग करती हैं। पास में रहने वाले वरुण भैया जहाँ कहीं भी कोई नल टपकता हुआ या खुला देख लेते हैं, तुरंत उसे बंद करते हैं। मरम्मत की आवश्यकता हो तो वह भी करवाते हैं। सरिता दीदी जो अगली गली में रहती हैं वे छत पर वाशिंग मशीन से कपड़े धोने के बाद निकले पानी से पूरी छत साफ कर लेती हैं। तुम्हारी दादी कई सब्जियाँ और खाने की कई चीजें भाप में पकाती हैं। ऐसा वे स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन बनाने के लिए करती हैं लेकिन इससे भी पानी की बचत होती है। किसी काम के बाद किसी भी बर्तन में पानी बचा रहता है, तो वे उसे बाथरूम में एक बाल्टी में इकट्ठा कर लेती हैं, जिसे फिर संडास में उपयोग कर लेती हैं। तुम्हारे पिताजी भी तो यहाँ जब रहते थे, उद्यान में पानी सुबह या शाम में ही पिलाया करते थे क्योंकि दिन के समय पानी तुरंत भाप बनकर उड़ जाता है।''

''हाँ! पिताजी तो अभी भी गमलों में पानी सुबह या शाम में ही देते हैं। लेकिन दादा जब इतना पानी आता है तो फिर इतना ध्यान से पानी खर्च करने की क्या आवश्यकता है?'' रानी ने जिज्ञासावश पूछा।

''बेटी! तुम जानती हो कुछ सुदूर रेगिस्तानी क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहाँ लोग पानी की एक-एक बूँद के लिए तरसते हैं। प्रतिदिन कुछ मटके पानी लाने के लिए भी उन्हें कई किलोमीटर दूर पैदल जाना पड़ता है। वहाँ घरों में हमारी तरह नल कनेक्शन नहीं होते। कई जगह ऐसी हैं जहाँ पूरे मोहल्ले के लोग एक ही सार्वजनिक नल से पानी भरते हैं। लम्बी कतार लगाकर वे घंटों राह देखते हैं। और इस पर भी उन्हें एकदम शुद्ध ताजा पानी नहीं मिलता। जब हमारी ही दुनिया के कुछ लोग बूँद-बूँद पानी के लिए तरस रहे हों तब क्या हमें यूँ पानी को व्यर्थ बहाना शोभा देता है?'' दादा ने प्यार से कहा।

''दादा! यूँ तो हमारी पृथ्वी का ७०% भाग जल से ढँका है। किन्तु बस ३% पानी ही पीने योग्य मीठा जल है। बाकी समुद्र का खारा पानी है। और मीठे जल का भी हम बस १% ही उपयोग कर पाते हैं और

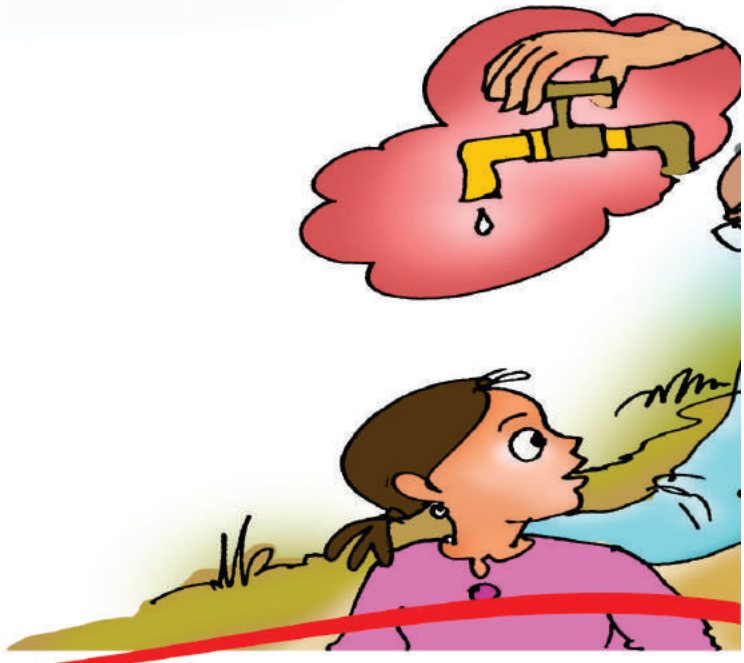

कुछ क्षेत्रों में वह आसानी से उपलब्ध ही नहीं। इसलिए वहाँ जल की इतनी समस्या है।'' रानी ने कहा।

''हाँ बेटी! पर जलसंकट का सामना उन्हीं की तरह भविष्य में हमें भी करना पड़ सकता है। कई ऐसे क्षेत्र भी हैं जहाँ किसी समय पानी की कोई कमी नहीं थी, पर वे आज जल संकट से जूझ रहे हैं। और आने वाले समय में यह संकट और भी बढ़ने वाला है।'' दादा ने कहा। ''ऐसा क्यों दादा? बारिश तो होती है।'' रानी ने थोड़ी हैरानी से पूछा।

''बेटी! चारों ओर जो यह विकास देख रही हो– पक्की सड़कें, बड़ी–बड़ी इमारतें, उद्योग धंधे.. इन सबके लिए जंगल कट रहे हैं। पानी का अंधाधुंध प्रयोग हो रहा है। भूमिगत जल में कमी होती जा रही है। जमीन कच्ची हो, पेड़–पौधें हों तो पानी का भूमि में प्रवेश बहुत आसानी से हो जाता है। किन्तु पक्की सड़कें, इमारतों, पक्की नालियों के कारण वर्षा का जल भूमि में नहीं जा पाता। व्यर्थ बहकर अंत में समुद्र में मिल जाता है। भूमिगत जल में कमी होती जायेगी तो हमें पानी मिलेगा कैसे? नदियों का जल भी उद्योगों से निकले अपशिष्ट पदार्थ और मानवीय क्रियाकलापों के कारण दूषित हो रह है। जल प्रबंधन की समुचित व्यवस्था नहीं है हमारे पास। ऐसे में जल संकट से तो सभी को जूझना ही पड़ेगा।'' दादा ने कहा।

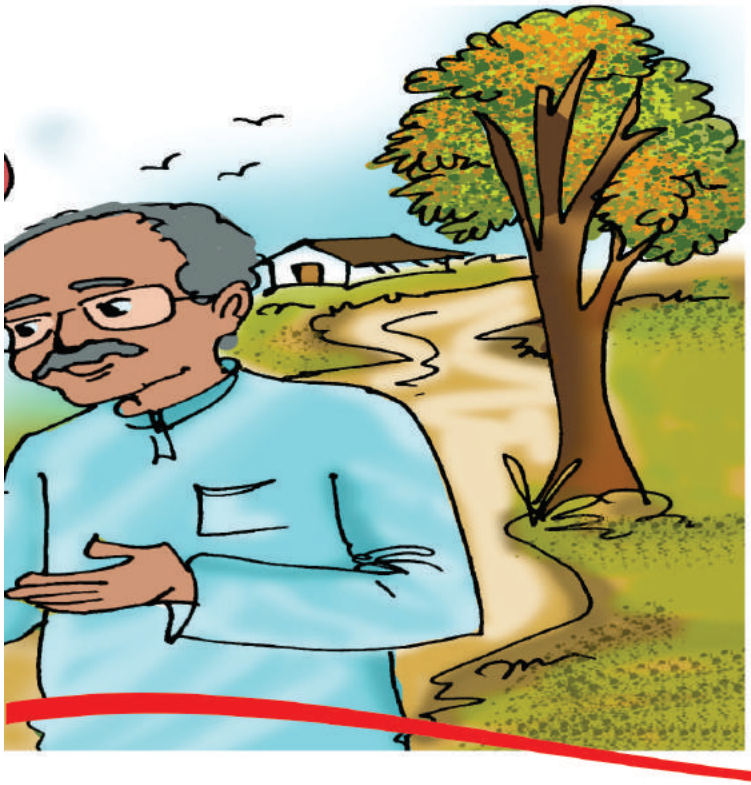

''क्षमा करें दादा! अब मुझे अनुभव हुआ कि पानी की एक–एक बूँद बचाना कितना आवश्यक है। अच्छा आपने ऊपर जो उपाय बताये उसके अलावा हम और कैसे–कैसे पानी बचा सकते हैं?'' रानी ने पूछा।

''बेटी! कुछ लोग अपने घरों में वर्षा जल संचय यंत्र (रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम) भी लगाते हैं। जिससे घर की छत पर गिरने वाले वर्षा के जल को पाइप आदि के माध्यम से एक जगह संग्रहित कर लिया जाता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर इसका प्रयोग किया जा सके। हम चाहें तो इस जल को भूमि में भी गड्ढे के माध्यम से उतार सकते हैं ताकि भूमिगत जल स्तर में वृद्धि हो। मैं जब छोटा था तब गाँव में लोग बारिश के पानी को छत के पाइप के नीचे बाल्टियाँ लगाकर भरते थे। अब तो पूरी व्यवस्था होती है जिससे यह स्वत: ही एक टैंक में संग्रहित हो जाता है। इसके अलावा नदियों, तालाबों आदि का जल प्रदूषित न हो इसका हमें ध्यान रखना चाहिए। बड़े स्तर पर बहुत कुछ करने की आवश्यकता है किन्तु हर एक व्यक्ति भी अपने स्तर पर जल संरक्षण करें तो इस समस्या से आसानी से निपटा जा सकता है। जैसे पानी का कोई भी कार्य करते समय नल को अनावश्यक खुला न छोड़े। जितनी आवश्यकता हो उतना ही ले। बचे पानी को फेंके नहीं।''

''हाँ दादा! अब से मैं भी ध्यान रखूँगी। और अपनी सहेलियों को भी बताऊँगी।'' रानी ने उत्साह से कहा।

''बहुत अच्छा! आज संध्या को हम यहाँ कि झील देखने चलेंगे।'' दादा ने जब कहा तो रानी और उत्साह से भर गई।

– भीलवाड़ा (राजस्थान)

क्या मांगा?

चित्रकथा-

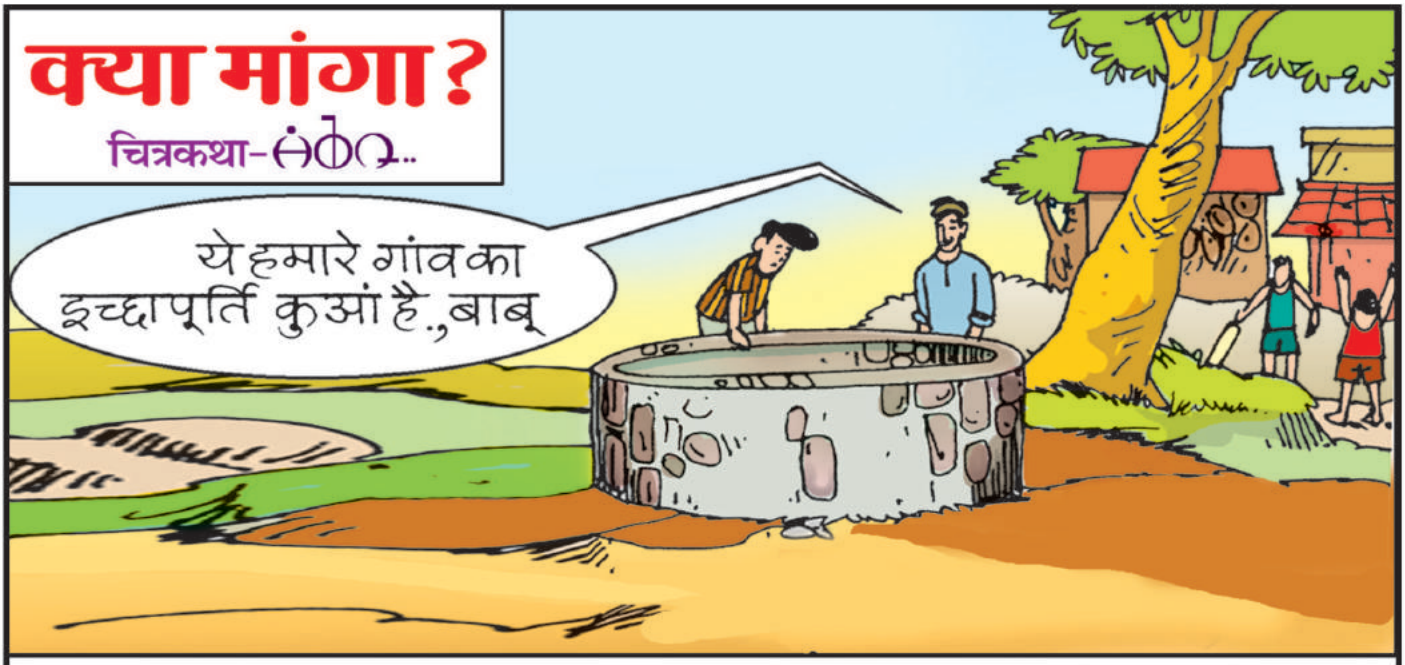
ये हमारे गांव का इच्छापूर्ति कुआं है.,बाबू

बरसों से लोग इसमें चांदी का एक सिक्का डालकर इच्छानुसार मांगते है..जो जरूर मिलता है.
अच्छा?!!

मेरे पास सिक्का है,मैं ऐसा करता हूं..

क्या मांगा?

कुएं में अब तक फेंकी गई सारी चांदी मुझे मिल जाए..

कविता : २० जुलाई : चंद्र दिवस

चंदा के घर दावत

– डॉ. अलका अग्रवाल

चंदा के घर जाऊँगी मैं,
दावत खाकर आऊँगी मैं।

जब भी चंदा नभ में आता,
मुझको संदेशा भिजवाता।

आओ तुम मेरे घर आओ,
चंद्रलोक में खाना खाओ।

तारों के संग दौड़ लगाओ,
बादल के संग हाथ मिलाओ।

चंद्रकिरण संग झूला झूलो,
अंबर की फुनगी को छू लो।

कितनी बार निमंत्रण आया,
मुझको अपने पास बुलाया।

अब कैसे रुक पाऊँगी मैं,
चंदा के घर जाऊँगी मैं।

– जयपुर (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना